केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के छत्तीसगढ़ आगमन पर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट पर किया स्वागत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

लोक शक्ति

मिस्र के विदेश मंत्री की भारत यात्रा रद्द

RNI Regn. No.7789/1964 | वर्ष-61 › अंक - 179 | रायपुर | सोमवार 23 जून 2025 विक्रम संवत 2082 | पृष्ठ 8 › मूल्य : 2 रू. | डाक पंजीयन : C.G./RYP DN/71/2023-25

पहलगाम आतंकी हमला : आतंकियों को पनाह देने के मामले में दो लोग गिरफ्तार

एजेंसी

पहलगाम आतंकी हमले के मामले में एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने दक्षिण कश्मीर के एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल पहलगाम में हुए भीषण हमले को अंजाम देने वाले आतंकवादियों को पनाह देने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। इस हमले में 26 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकतर पर्यटक थे और 16 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे। आरोपियों की पहचान पहलगाम के बटकोट निवासी परवेज अहमद जोथर और पहलगाम के हिल पार्क निवासी बशीर अहमद जोथर के रूप में हुई है। एनआईए के अनुसार, गिरफ्तार व्यक्तियों ने हमले में शामिल तीन सशस्त्र आतंकवादियों की पहचान का खुलासा किया है, और यह भी पुष्टि की है कि वे प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े पाकिस्तानी नागरिक थे। एनआईए की जांच के अनुसार, परवेज और बशीर ने जानबूझकर हमले से पहले हिल पार्क में एक मौसमी ढोक (झोपड़ी) में तीन सशस्त्र आतंकवादियों को शरण दी थी।

छत्तीसगढ़ पहुंचे अमित शाह ने नक्सलियों से की अपील-

हथियार डालिए, सरकार पर भरोसा कीजिए

अमित शाह का ऐलान-छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद के खात्मे की तय तारीख- 31 मार्च 2026 तक देश होगा नक्सल मुक्त

संवाददाता।

अमित शाह ने नक्सलियों से अपील करते हुए कहा कि आत्मसमर्पण की सरकार की नीति बेहद आकर्षक है। जो हथियार छोड़ना चाहते हैं, उनके लिए इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा। सरकार वादे निभाएगी और पुनर्वास में हर संभव मदद देगी।

आई-हब की स्थापना को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि यह प्लेटफॉर्म छत्तीसगढ़ के युवाओं को स्टार्टअप कल्चर से जोड़ने, तकनीकी सहायता देने, फंडिंग मुहैया कराने और मार्केटिंग एवं अनुबंध जैसी प्रोफेशनल सेवाएं देने में सहायक होगा। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे खुद उद्योगपति बनें, स्टार्टअप शुरू करें और राज्य के औद्योगिक विकास में भागीदार बनें। यह आई-हब, गुजरात के मॉडल पर आधारित है, और भविष्य में रायपुर से भी कई वैश्विक स्टार्टअप उभरने की संभावना है।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि छत्तीसगढ़ में नई सरकार बनने के बाद 5 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्तावों पर एमओयू हुए हैं, जिससे रोजगार, राजस्व और औद्योगिक संस्कृति को बल मिलेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और गृह मंत्री विजय शर्मा के नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन दोनों ने नक्सल विरोधी अभियान को निर्णायक गति दी है। पहली बार ऐसा हुआ है कि वर्षा ऋतु में भी सुरक्षा बल सक्रिय हैं और नक्सलियों को चैन से रहने नहीं दे रहे। उन्होंने नक्सलियों से आत्मसमर्पण करने और छत्तीसगढ़ की विकास यात्रा में शामिल होने की अपील की।

फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी और स्टार्टअप आईहब की सौगात

नवा रायपुर में नेशनल फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी और सेंट्रल फॉरेंसिक लैब की नींव रखी गई। साथ ही स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए 'आईहब' की शुरुआत हुई है, जो युवाओं को तकनीकी और आर्थिक मदद देगा।

केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा कि एनएफएसयू का स्थायी परिसर तीन वर्षों में पूर्ण रूप से विकसित होगा, जिससे छत्तीसगढ़ के युवाओं के लिए फॉरेंसिक क्षेत्र में करियर की असीम संभावनाएं खुलेंगी। उन्होंने भरोसा दिलाया कि मोदी सरकार के तहत एनएफएसयू से स्नातक करना रोजगार की गारंटी बनेगा। साथ ही देशभर में लागू हुए नए तीन आपराधिक कानूनों के संदर्भ में श्री शाह ने कहा कि इनका उद्देश्य है : तीन वर्षों के भीतर न्याय सुनिश्चित करना, और विज्ञान आधारित साक्ष्यों पर आधारित आधुनिक आपराधिक न्याय प्रणाली की स्थापना करना। उन्होंने बताया कि अब 7 वर्ष से अधिक की सजा वाले अपराधों में फॉरेंसिक जांच अनिवार्य कर दी गई है। सभी पुलिस थानों को सीसीटीएनएस से जोड़ दिया गया है, जिससे राज्य सरकारें जांच और निगरानी की प्रक्रिया में तकनीकी रूप से दक्ष हो सकेंगी। यह बदलाव न केवल न्यायिक प्रक्रिया को मजबूत करेगा, बल्कि भारत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सजा सुनिश्चित करने वाले देशों की अग्रिम पंक्ति में ले आएगा।

केंद्रीय गृहमंत्री शाह ने यह भी बताया कि देशभर में एनएफएसयू के 16 परिसरों की स्थापना हो चुकी है और 10 अन्य प्रस्तावित हैं। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में फॉरेंसिक टेक्नोलॉजी की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। एक हालिया सर्वेक्षण का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि वर्ष 2026 तक फॉरेंसिक टेक्नोलॉजी का वैश्विक बाजार 55 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा।

एयर इंडिया का बड़ा फैसला, उड़ानों की संख्या घटाई

नई दिल्ली: एजेंसी

एयर इंडिया ने रविवार को कहा कि वह 19 मार्गों पर संकरे आकार के विमानों से संचालित 118 साप्ताहिक उड़ानों को अस्थायी रूप से कम करेगी और तीन मार्गों पर सेवाएं निलंबित करेगी। टाटा समूह के स्वामित्व वाली इस एयरलाइन ने कुछ दिनों पहले कहा था कि वह चौड़े आकार के विमानों से संचालित अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में अस्थायी रूप से 15 प्रतिशत की कटौती करेगी। एयरलाइन ने एक बयान में कहा कि वह अपने कुल संकरे आकार के बेड़े में पांच प्रतिशत से कम की अस्थायी कटौती करने जा रही है।

15 जुलाई तक घटाई गई विमानों की संख्या - बयान के मुताबिक, ''इस स्वैच्छिक निर्णय से एयर इंडिया की सेवाओं का तीन मार्गों पर अस्थायी निलंबन होगा और 19 मार्गों पर फेरों में कमी आएगी। ये परिवर्तन कम से कम 15 जुलाई 2025 तक प्रभावी रहेंगे।'' तीन मार्गों - बेंगलुरु-सिंगापुर, पुणे-सिंगापुर और मुंबई-बागडोगरा (एआई551/552) पर सप्ताह में सात बार उड़ानें कम से कम 15 जुलाई तक स्थगित रहेंगी। दिल्ली-बेंगलुरु और दिल्ली-मुंबई सहित कई अन्य मार्गों पर उड़ानों की संख्या में कमी की जाएगी। एयरलाइन के अनुसार इस कटौती का मकसद एयर इंडिया के नेटवर्क परिचालन की स्थिरता को मजबूत करना और यात्रियों को अंतिम समय में होने वाली असुविधा को कम करना है।

एयर इंडिया ने दिया बयान

एयर इंडिया के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, ÷खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते तनाव के बीच, एयर इंडिया समूह पुष्टि करता है कि हमारी उड़ानें वर्तमान में ईरान, इराक और इजरायल के हवाई क्षेत्रों से होकर नहीं गुजरती हैं। एक सक्रिय उपाय के रूप में, हम आने वाले दिनों में फारस की खाड़ी के ऊपर कुछ हवाई क्षेत्रों के उपयोग से बचेंगे, इसके बजाय यूएई, कतर, ओमान और कुवैत सहित गंतव्यों के लिए उड़ानों के लिए वैकल्पिक मार्गों का चयन करेंगे।

इस समायोजन से इन सेवाओं के लिए उड़ान अवधि में वृद्धि हो सकती है। एयर इंडिया हमारे बाहरी सुरक्षा सलाहकारों के साथ निरंतर परामर्श कर रही है और विकसित हो रही स्थिति की सतर्कतापूर्वक निगरानी कर रही है। हमारे संचालन की सुरक्षा और अखंडता को बनाए रखने के लिए, यदि आवश्यक हो, तो अतिरिक्त उपायों को लागू करने के लिए तैयार हैं।

किसानों के खेत तक पहुंचेगा विज्ञान, वैज्ञानिक अब सप्ताह में तीन दिन करेंगे दौरा

नई दिल्ली,। भारत सरकार ने देश के कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने और किसानों को वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है. इसके तहत अब वैज्ञानिक सप्ताह में तीन दिन खेतों में जाकर किसानों से सीधी बातचीत करेंगे और उन्हें नवीनतम कृषि तकनीकों, बीजों की गुणवत्ता, मृदा परीक्षण, जल प्रबंधन, फसल रोग नियंत्रण और उन्नत खेती विधियों की जानकारी देंगे. इस निर्णय का उद्देश्य पारंपरिक खेती को वैज्ञानिक आधार पर सुदृढ़ करना और किसानों की आमदनी को बढ़ाना है.

आईसीएआर-आईएआरआई

के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आर.एस. बाना के अनुसार, जब वैज्ञानिक खेतों में जाकर किसानों से सीधा संवाद करते हैं, तो न केवल वैज्ञानिक शोध का सही उपयोग होता है, बल्कि किसानों की जमीनी समस्याओं को भी वास्तविक समय में समझा जा सकता है. सरकार ने यह भी तय किया है कि कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) को इस पहल का मुख्य केंद्र बनाया जाएगा।

यूपी की सभी विधानसभाओं में बनेंगे स्टेडियम, सीएम योगी के निर्देश के बाद मांगे गए प्रस्ताव

एजेंसी

उत्तरप्रदेश में खेल प्रतिभाएं और निखर सकेंगी। ग्रामीण अंचल की प्रतिभाएं सुविधाओं के अभाव में दम नहीं तोड़ेंगी। इसके लिए सभी विधानसभा क्षेत्रों में स्पोर्ट्स स्टेडियम का निर्माण कराया जाएगा। प्रमुख सचिव युवा कल्याण ने इस संबंध में प्रस्ताव मांगे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बीते दिनों अधिकारियों को निर्देश दिए थे कि हर विधानसभा क्षेत्र में एक मिनी स्पोर्ट्स स्टेडियम और हर मंडल में एक आधुनिक स्पोर्ट्स कालेज बनाने की प्रक्रिया में तेजी लाई जाए। इन स्पोर्ट्स कालेजों को सेंटर आफ एक्सीलेंस के रूप में

विकसित किया जाए और इन्हें स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी से जोड़ा जाए, ताकि खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं मिल सकें।

खेल प्रतियोगिताओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए ग्राम पंचायत से लेकर राज्य स्तर तक की सभी प्रतियोगिताओं को एकीकृत करते हुए एमपी-एमएलए स्पोर्ट्स गेम्स से जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि हर जिले में हर आयु वर्ग के लिए खेल प्रतियोगिताएं कराई जाएं, ताकि छिपी हुई प्रतिभाओं को खोजा और तराशा जा सके। इसी क्रम में प्रमुख सचिव युवा कल्याण ने जिला प्रशासन को पत्र जारी किया था। जिसमें विधानसभा क्षेत्र जहाँ पर पूर्व से युवा कल्याण विभाग द्वारा एक भी ग्रामीण स्टेडियम का निर्माण नहीं कराया गया है, उस विधानसभा क्षेत्र में भूमि का चिन्हाकन कर ग्रामीण स्टेडियम एवं ओपन जिम निर्माण से सम्बन्धित प्रस्ताव मांगा था।

चंडौस, जवां, इगलास और गोण्डा में स्टेडियम का है प्रस्ताव - विधानसभा क्षेत्र गभाना के विकास खण्ड चण्डौस एवं जवाँ और विधानसभा क्षेत्र इगलास के विकास खण्ड इगलास एवं गौण्डा में युवा कल्याण विभाग द्वारा एक भी ग्रामीण स्टेडियम पूर्व से निर्मित नहीं है। यहां स्टेडियम निर्माण के लिए जिला स्तर पर प्रस्ताव तैयार किया गया है।

अमृतसर में दो पाकिस्तानी जासूस गिरफ्तार

व्हाट्सएप पर आईएसआई को भेजते थे खुफिया जानकारी

अमृतसर,पंजाब पुलिस ने पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के लिए जासूसी करने के आरोप में दो लोगों का गिरफ्तार किया है. अमृतसर ग्रामीण पुलिस के अनुसार, आरोपी की पहचान गुरप्रीत सिंह उर्फ गोपी फौजी और साहिल मसीह उर्फ शाली और राणा जावेद के रूप में हुई है. खुफिया जानकारी के आधार पर अमृतसर ग्रामीण पुलिस ने आईएसआई से जुड़ी जासूसी गतिविधियों में संलिप्तता के आरोप में गिरफ्तार किया है. पंजाब पुलिस के डीजीपी गौरव यादव ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि प्रारंभिक जांच में पता चला है कि गुरप्रीत सिंह पाकिस्तान की आईएसआई के एजेंटों के सीधे संपर्क में था।

इसरो ने शुरू की स्पैडेक्स-2 मिशन की तैयारी

देश की अंतरिक्ष अन्वेषण यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम

एजेंसी

अंतरिक्ष में 2 उपग्रहों को सफलतापूर्वक एक साथ लाने के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) अपने दूसरे स्पैडेक्स मिशन की योजना तैयार कर रही है। इस बार 2 उपग्रहों को अंडाकार कक्षा में स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। यह देश की अंतरिक्ष अन्वेषण यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। पहला स्पैडेक्स मिशन सफल रहा था, जिसमें 220 किलोग्राम के 2 सेटेलाइट्स 470 किलोमीटर की ऊंचाई पर एक गोलाकार कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित हुए थे।

आगामी स्पैडेक्स-2 मिशन और भी अधिक चुनौतीपूर्ण होगा क्योंकि, इसमें दीर्घवृत्ताकार कक्षा में डॉकिंग शामिल है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, उपग्रहों का प्रक्षेप पथ और वेग दीर्घवृत्ताकार कक्षा में बदलता रहता है, जिससे एक बिंदु के लिए की गई गणना कुछ मिनटों के बाद बदल जाती है। मामले से परिचित एक वैज्ञानिक ने कहा, एक वृत्ताकार कक्षा में डॉकिंग दीर्घवृत्ताकार कक्षा में डॉकिंग की तुलना में बहुत आसान है। स्पैडेक्स-2 मिशन को चंद्रयान-4 के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

16 जनवरी को शुरू हुए पहले स्पैडेक्स मिशन में 2 उपग्रहों को एक-दूसरे के तब करीब लाया गया, जब तक कि वे सफलतापूर्वक डॉक नहीं हो गए। इस प्रयोग ने उपग्रहों के बीच शक्ति साझा करने और एक यूनिट के रूप में कमांड प्राप्त करने की क्षमता को भी दिखाया। इससे भारत, अमेरिका, रूस और चीन के बाद अंतरिक्ष में डॉकिंग क्षमताओं का प्रदर्शन करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया।

विश्व | **ईरान ने अपने परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमले को बताया खतरनाक युद्ध की शुरुआत**

ईरान में अमेरिकी हमले के बाद न्यूयॉर्क और वाशिंगटन में हाई अलर्ट

अमेरिका के हमले के बाद ईरान के पूर्व क्राउन प्रिंस ने मांगा खामेनेई का इस्तीफा

तेहरान,22 जून। अमेरिका की ओर से ईरान के 3 परमाणु ठिकानों पर किए गए हवाई हमले के लिए निर्वासित क्राउन प्रिंस रेजा शाह पहलवी ने इस्लामिक रिपब्लिक की परमाणु महत्वाकांक्षाओं और नीतियों को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने इसके लिए ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के इस्तीफे की मांग की है और कहा कि शांति ही इस शासन का एकमात्र निश्चित रास्ता और अंत है। उन्होंने कहा कि खामेनेई का आतंकवादी शासन राष्ट्र को असफल बना चुका है।

ईरान के पूर्व क्राउन प्रिंस पहलवी ने अमेरिका के हमला करने के बाद एक्स पर लिखा, ईरान के 3 परमाणु ठिकानों पर हमले इस्लामिक रिपब्लिक की परमाणु हथियारों की विनाशकारी खोज का परिणाम है, जिसने ईरानी जनता के हितों को ताक पर रख दिया। खामेनेई और उनका ढहता हुआ आतंकवादी शासन राष्ट्र को असफल कर चुका है। उन्होंने खामेनेई से भूमिगत बंकर से जवाबी कार्रवाई पर विचार करने के बजाय जनता के हित में इस्तीफा देने की अपील की है।

पहलवी ने आगे लिखा, खामेनेई के इस्तीफे से गौरवशाली ईरानी राष्ट्र इस्लामिक रिपब्लिक के विनाशकारी दौर को पीछे छोड़कर शांति, समृद्धि और महानता का नया अध्याय शुरू कर सकेगा। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि देश में शांति बहाल करने का एकमात्र निश्चित तरीका ये है कि इस व्यवस्था (खामेनेई शासन) का अंत हो जाए। बता दें कि इससे पहले पहलवी ने खामेनेई के बंकर में छिपने के बाद उन्हें डरा हुआ चूहा करार दिया था।

अमेरिका ने ईरान और इजरायल संघर्ष में कूदते हुए ईरान के 3 परमाणु ठिकानों पर हमला कर दिया।

ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर अमेरिका ने गिराए बम

अमेरिकी हमले से भड़का ईरान, इजरायल पर बोला मिसाइलों से हमला, 16 लोग घायल

एजेंसी।

ईरान और इजरायल के बीच जंग में आधिकारिक तौर पर अमेरिका भी कूद गया है। अमेरिका ने भारतीय समयानुसार आज सुबह 4:30 बजे ईरान में 3 परमाणु ठिकानों पर हमला किया है। इनमें नतांज, फोर्दो और इस्फहान शामिल है। हमले के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर लिखा कि फोर्दो खत्म हुआ। उन्होंने कहा कि सभी विमान सुरक्षित रूप से अपने घरों की ओर लौट गए हैं। ट्रंप ने कहा, हमारे महान अमेरिकी योद्धाओं को बधाई। दुनिया में कोई और सेना नहीं है जो ऐसा कर सकती थी। अब शांति का समय है। उन्होंने कहा कि ईरान को अब इस युद्ध को समाप्त करने के लिए सहमत होना चाहिए। इसके बाद देश के नाम संबोधन में उन्होंने कहा, अब ईरान को शांति कायम करना चाहिए। अगर वह ऐसा नहीं करता है, तो उस पर और बड़े हमले किए जाएंगे।

इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा, मैंने आपसे वादा किया था कि ईरान की परमाणु सुविधाएं किसी न किसी तरह से नष्ट कर दी जाएंगी। अभियान के बाद मैंने तुरंत ट्रंप को बधाई देने के लिए फोन किया। उन्होंने मुझे, हमारी सेना और हमारे लोगों को बधाई दी। राष्ट्रपति ट्रंप ताकत के साथ मुक्त दुनिया का नेतृत्व कर रहे हैं। वह इजरायल के बहुत अच्छे मित्र हैं, उनके जैसा कोई दूसरा नहीं है। एक अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि ईरान के फोर्दो परमाणु संयंत्र पर 12 बंकर बस्टर बम गिराए गए। इसके लिए अमेरिका ने 6 बी-2 बमवर्षक विमानों को तैनात किया था। इसके अलावा नौसेना की पनडुब्बियों से ईरान के नतांज और इस्फहान परमाणु ठिकानों को निशाना बनाकर 30 टॉमहॉक क्रूज मिसाइलें दागी गईं।

ईरान ने इस्त्राइल पर दागीं मिसाइलें : अमेरिकी ने ईरान में 14 बंकर-बस्टर बम गिराए

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा की है कि अमेरिका ने ईरान के तीन परमाणु ठिकानों फ़ोर्दो, नतांज़ और इस्फ़हान पर अपने हमले पूरे किए हैं. इन हमलों को ईरान ने यूएन चार्टर का उल्लंघन बताया है. रविवार की सुबह ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा, ÷हमने फोर्दो, नतांज़ और इस्फ़हान समेत ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर सफलतापूर्वक हमलों को अंजाम दिया है. सभी विमान अब ईरान के वायु क्षेत्र से बाहर हैं.÷

ट्रंप ने आगे लिखा कि फ़ोर्दो पर 'सारे बम' गिराए गए हैं और सभी विमान सुरक्षित रूप से अमेरिका वापस लौट रहे हैं. साथ ही ट्रंप ने लिखा कि 'हमारे महान अमेरिकी योद्धाओं को बधाई. दुनिया में कोई और सेना नहीं है जो ये कर सकती थी. अब शांति का समय है.'

पीएम मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति से की बात

एजेंसी

पश्चिम एशिया के हालात को देखते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन से बात की। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा कि ईरान के राष्ट्रपति से बात की। हमने मौजूदा स्थिति के बारे में विस्तार से चर्चा की। हाल ही में हुई बढ़े तनाव पर गहरी चिंता व्यक्त की। आगे बढ़ने के लिए तत्काल तनाव कम करने, बातचीत और कूटनीति के लिए अपना आह्वान दोहराया और क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और स्थिरता की शीघ्र बहाली की मांग की।

रूस ने ईरानी परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमले की कड़ी निंदा की - रूस ने रविवार को ईरान में तीन परमाणु सुविधाओं पर अमेरिकी हमलों की कड़ी निंदा की, और कहा कि यह अंतर्राष्ट्रीय कानून, संयुक्त राष्ट्र चार्टर और

यूएनएससी प्रस्तावों का घोर उल्लंघन करता है। अमेरिका ने आज तड़के सुबह ईरान में तीन प्रमुख परमाणु स्थलों - फोर्दो, नतांज और इस्फहान पर बमबारी की, जिससे वह खुद को इस्राइल-ईरान संघर्ष में ले आया। एक बयान में, रूसी विदेश मंत्रालय ने कहा, 'किसी संप्रभु राज्य के क्षेत्र को मिसाइल और बम हमलों के अधीन करने का गैर-जिम्मेदाराना निर्णय, चाहे कोई भी तर्क इस्तेमाल किया जाए, अंतर्राष्ट्रीय कानून, संयुक्त राष्ट्र चार्टर और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों का घोर उल्लंघन करता है, जिसने पहले स्पष्ट रूप से ऐसी कार्रवाइयों को अस्वीकार्य बताया था।'

सेन समाज की प्रतिभाओं ने अपनी उपलब्धियों से समाज को किया गौरवान्वित : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री साय सर्व नाई सेन समाज के महासम्मेलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह में हुए शामिल

रायपुर । मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज जशपुर जिले के कुनकुरी के महुआटोली में आयोजित सर्व नाई सेन समाज के महासम्मेलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री साय ने अपने उद्बोधन में कहा कि नाई समाज को मेहनती और स्वावलंबी समाज के रूप में जाना जाता है। सेन समाज के अनेक लोग आज शिक्षा, व्यापार, प्रशासन और तकनीकी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा के दम पर विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि इस वर्ष 12वीं कक्षा के प्रदेश टॉपर अखिल सेन इसी समाज से हैं। रायपुर में एआई डेटा सेंटर की स्थापना करने जा रहे इंदौर के उद्यमी भी सेन समाज से हैं। मुख्यमंत्री ने भारत रत्न स्व. कर्पूरी ठाकुर जी का स्मरण करते हुए कहा कि देश की उन्नति में सेन समाज का योगदान उल्लेखनीय रहा है।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि जन्म से लेकर अंत्येष्टि तक कोई भी संस्कार सेन समाज के योगदान के बिना पूर्ण नहीं होता। समाज के विविध संस्कारों में इस समाज की भूमिका अत्यंत विशिष्ट है।

शिक्षा है समाज की प्रगति की कुंजी : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री साय ने शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा केवल रोजगार प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की कुंजी है। जिस समाज में शिक्षा का स्तर ऊंचा होता है, वह समाज उतना ही सशक्त और प्रगतिशील बनता है।उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बच्चों की शिक्षा गुणवत्ता को बेहतर बनाने हेतु निरंतर नीतिगत निर्णय ले रही है। राज्य में अब राष्ट्रीय स्तर की सभी प्रमुख शैक्षणिक संस्थाएँ स्थापित की जा रही हैं। नालंदा परिसर जैसे अत्याधुनिक पुस्तकालयों का निर्माण प्रदेशभर में किया जा रहा है, ताकि छात्र प्रतियोगी युग के अनुरूप स्वयं को तैयार कर सकें।

सेन समाज को सामाजिक भवन विस्तार व बाउंड्रीवाल के लिए 20 लाख की सौगात

मुख्यमंत्री साय ने इस अवसर पर कुनकुरी स्थित सेन समाज के सामाजिक भवन के विस्तार हेतु ?10 लाख और बाउंड्रीवाल निर्माण हेतु ?10 लाख की राशि स्वीकृत करने की घोषणा की।

छत्तीसगढ़ केश शिल्पी बोर्ड की अध्यक्ष सु मोना सेन ने इस अवसर पर कहा कि महतारी वंदन योजना प्रदेश की महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मसम्मान का मजबूत आधार बन रही है। उन्होंने कहा कि इस योजना ने माताओं-बहनों में एक नया आत्मविश्वास जगाया है और शासन की जनहितैषी योजनाएँ प्रदेश में सभी वर्गों के सर्वांगीण विकास का आधार बन रही हैं।

मुख्यमंत्री ने सेन समाज की प्रतिभाओं को किया सम्मानितमुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर सेन समाज के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभावान सदस्यों को संत शिरोमणि सेन सम्मान से सम्मानित किया।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष सालिक साय, कलेक्टर रोहित व्यास, पुलिस अधीक्षक शशिमोहन सिंह, कृष्ण कुमार राय, भरत सिंह, सर्व सेन समाज के प्रदेश अध्यक्ष पुनीत सेन, प्रदेश उपाध्यक्ष अविनाश ठाकुर, राज वास सहित समाज के पदाधिकारीगण, गणमान्यजन और बड़ी संख्या में समाज के सदस्य उपस्थित थे।

डिजिटल अरेस्ट के नाम पर लाखों की ठगी करने वाले दो और आरोपी महाराष्ट्र से गिरफ्तार

दुर्ग। भिलाई के प्रगति नगर रिसाली निवासी चंद्राकर परिवार से दो करोड़ की मनी लांड्रिंग का आरोप लगाते हुए सायबर ठगों द्वारा डिजिटल अरेस्ट के नाम पर 54 लाख 90 हजार रुपए की ठगी करने के मामले में दुर्ग पुलिस ने 2 आरोपियों को ठाणे से गिरफ्तार किया है। मामले में पहले भी पुलिस ने 4 लोगों को गिरफ्तार किया था। इस तरह इस मामले में अबतक कुल 6 लोग गिरफ्तार किए गये है।

बता दें कि सायबर ठगों ने खुद को सीबीआई अधिकारी बताकर भिलाई निवासी नम्रता चन्द्राकर के पिता को वीडियो कॉल किया। उन्होंने झूठा आरोप लगाया कि उनके नाम से केनरा बैंक में खोला गया खाता नरेश गोयल नामक व्यक्ति को बेच दिया गया है और उस खाते से 2 करोड़ रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग की गई है। शातिर ठगों ने परिवार के सभी सदस्यों को डरा-धमका कर की संपत्तियों की जानकारी ली और फिर उन्हें डिजिटल अरेस्ट करने की धमकी दी। डर का माहौल बनाकर आरोपियों ने चंद्राकर परिवार से 29 अप्रैल से 29 मई के बीच अलग-अलग खातों और किस्तों में 54 लाख 90 हजार रुपये की ठग लिए।

इस मामले में पुलिस ने उन खातों की जांच की है जिनमें ठगे गए पैसे जमा कराए गए थे। इसके आधार पर पुलिस ने पहले लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से 4 आरोपियों- दीपक गुप्ता, राजेश विश्वकर्मा, कृष्ण कुमार और शुभम श्रीवास्तव को गिरफ्तार किया था। आज दो और आरोपी रुषिकेश जोशी और खाता धारक बालकरन जोशी को महाराष्ट्र के ठाणे जिले से गिरफ्तार किया गया है। इस तरह मामले में अबतक कुल 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। दुर्ग पुलिस ने आईटी एक्ट और ठगी की धाराओं के तहत अपराध दर्ज कर जांच तेज कर दी है।

शिवनाथ नदी में बाढ़ बचाव के लिए मॉकड्रिल, कलेक्टर ने तैयारियों की सराहना की

कलेक्टर अभिजीत सिंह ने तैयारियों का लिया जायजा

दुर्ग । कलेक्टर अभिजीत सिंह के मार्गदर्शन में बाढ़ आपदा से बचाव की आवश्यक तैयारियों का जायजा लेने के लिए शिवनाथ नदी में आज मॉकड्रिल का आयोजन किया गया। नगर सेना विभाग द्वारा जिला स्तर पर उपलब्ध समस्त बाढ़ बचाव सामग्रियों का मॉकड्रिल किया गया। कलेक्टर ने राज्य आपदा मोचन दल की तैयारियों की सराहना की। मॉकड्रिल में अतिवृष्टि के दौरान शिवनाथ नदी में ग्रामीण जन लकड़ी या छोटे-छोटे बोट के माध्यम से नदी पार करते समय बोट पल्टी हो जाने एवं गांव में पानी भर जाने की स्थिति में किस प्रकार से जिले में उपलब्ध मोटर बोट, स्क्यूबा डायविंग, अंडरवाटर कैमरा, लाइफ जैकेट, लाइफ बॉय आस्का लाइट, पेलिकन लाइट, सर्च लाइट विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का प्रयोग कर बाढ़ बचाव कार्य का लाइव डेमो (मॉकड्रिल) का आयोजन किया गया। मॉकड्रिल के दौरान राज्य आपदा मोचन बल ;एसडीआरएफ) की टीम ने नदी में डूब रहे व्यक्तियों को बचाने, तेज बहाव में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने और गांव में पानी भरने की स्थिति में राहत पहुंचाने जैसे महत्वपूर्ण अभियानों का अभ्यास किया। इस मौके पर आधुनिक उपकरणों जैसे मोटर बोट, स्क्यूबा डाइविंग किट, अंडरवाटर कैमरा, लाइफ जैकेट, लाइफ बॉय, आस्का लाइट, पेलिकन लाइट और सर्च लाइट का उपयोग कर लाइव डेमो प्रस्तुत किया गया। कलेक्टर सिंह ने एसडीआरएफकी तैयारियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह के मॉकड्रिल से आपदा के समय त्वरित और समन्वित कार्यों में मदद मिलेगी।

प्रयास आवासीय विद्यालय में मोहला ब्लॉक से 47 बच्चों का चयन

मोहला। प्रयास आवासीय विद्यालय 9वी प्रवेश के लिए आयोजित प्राक्कयन परीक्षा मोहला ब्लॉक के 47 बच्चों का चयन हुआ है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में जारी परीक्षा परिणाम में विकासखंड मोहला के विद्यार्थियों ने पुनः अपना दबदबा स्थापित कर क्षेत्र को गौरवांवित किया है। विकासखंड शिक्षा अधिकारी मोहला राजेन्द्र कुमार देवांगन ने जानकारी दिया कि अनुसूचित जाति 05, अनुसूचित जनजाति से 30, अन्य पिछड़ा वर्ग से 09 तथा सामान्य वर्ग से 03 छात्र-छात्राओं सहित 47 विद्यार्थियों का चयन प्रयास आवासीय विद्यालय कक्षा 9वी के लिए हुआ है। इस परीक्षा की तैयारी हेतु शिखर कोचिंग के माध्यम से शिक्षकों द्वारा चरणबद्ध तरीके से विद्यार्थियों की तैयारी कराई गई थी जिसका सुखद परिणाम है कि बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने प्राक्कयन परीक्षा पास कर ली है। इन सभी विद्यार्थियों का 23 जून से काउंसलिंग रायपुर प्रयास विद्यालय में किया जाना है जहां इन्हें सीटों का आवंटन किया जाएगा। विशेष बात यह है कि प्रदेश में प्रयास आवासीय विद्यालय रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, सरगुजा कोरबा, जगदलपुर सहित प्रदेश के 15 स्थानो पर स्थापित है जहां बच्चों को 9वी में प्रवेश देकर 12वीं तक निशुल्क शिक्षा एवं आगे की पढ़ाई के लिए विशेष रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे जेईई, नीट, कैट इत्यादि की तैयारी कराई जाती है। इस चयन परीक्षा में पीएमसेजेस मोहला, डुमरटोला, करमरी, शिशु मंदिर, धोबेदण्ड, रेंगाकठेरा इत्यादि स्कूलो से अच्छी संख्या में बच्चो का चयन हुआ है। गोटाटोला के छात्र कुलदीप देवांगन ने 91 अंक के साथ पूरे प्रदेश में अव्वल स्थान भी बनाया है।

अमृत सरोवर में योग अभ्यास, ग्रामीणों ने बड़ी संख्या में भाग लिया

दुर्ग। विश्व योग दिवस के अवसर पर 21 जून को ग्राम पंचायत के अमृत सरोवर में योग दिवस का सफल आयोजन किया गया। ग्राम पंचायत थनौद, जनपद पंचायत दुर्ग, जिला पंचायत दुर्ग श्रीमती रूखमणि यादव, श्रीमती मंजू चंद्राकर योग शिक्षिका द्वारा सरपंच श्रीमती मेनका देशमुख, सचिव सुलता देवांगन, ग्राम रोज़गार सहायक सुकमलेश्वरी देशमुख, जनपद सदस्य श्रीमती संगीता माखन साहू, सहायक परियोजना अधिकारी मनरेगा अर्दीप ढीढी, कार्यक्रम अधिकारी जनपद पंचायत दुर्ग मनरेगा श्रीमती गौरव मिश्रा, तकनीकी सहायक सुवर्षा साहू, योगा ट्रेनर श्रीमती रूखमणि यादव, श्रीमती मंजू चंद्राकर उपस्थित ग्रामीण जन की मौजूदगी में ग्रामीणों को योग अभ्यास कराया गया। जिसमें बड़ी संख्या में मनरेगा मजदूर ने अपना योग अभ्यास किया। बता दे कि जिले में महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना अंतर्गत निर्मित अमृत सरोवर में योग दिवस का आयोजन गया। कलेक्टर अभिजीत सिंह ने ग्राम पंचायत में योग दिवस आयोजित करने दिशा निर्देश जारी किया गया। समस्त ग्राम पंचायतों में अमृत सरोवरों, ग्राम पंचायत भवनों योग दिवस का आयोजन किया जाना है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का एक दशक पूर्ण करने के उपलक्ष्य में 21 जून 2025 को सभी ग्राम पंचायतों के विभिन्न स्थलो सामुदायिक हॉल, शाला मैदान, अमृत सरोवर स्थल एवं पंचायत भवन के समीप समय प्रातः 6:30 बजे से प्रातः 7:45 तक आयोजित किया गया है। योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया बजरंग कुमार दुबे मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत ने बताया कि जिले अमृत सरोवर बनाया गया। पूर्व में जिले में कुल 123 ब्लाक धमधा 50, ब्लाक दुर्ग 36 एवं पाटन 37 अमृत सरोवर का निर्माण किया गया। इस वर्ष 7 अमृत सरोवर निर्माण किया जा रहा हैं। अमृत सरोवर में योग दिवस पर की जानी वाली विशेष गतिविधियाँ का निर्देष, प्रातः काल योग सत्र - सरपंच, पद्मपुरूस्कार प्राप्तकर्ता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं उनके परिवार के सदस्य, स्थानीय सरकारी अधिकारी और अन्य हितधारकों की सक्रिय भागीदारी के साथ, समस्त ग्रामवासियों, स्कूल के बच्चों, स्व सहायता समूहों, और प्रकृति प्रेमियों के साथ योगा अभ्यास किया गया।

बिलासपुर- काचेगुडा-बिलासपुर के मध्य 04 फेरों के लिए स्पेशल ट्रेन की सुविधा

बिलासपुर। रेल यात्रियो की सुविधा और यात्रियों की भीड़भाड़ को ध्यान मे रखते हुए रेलवे प्रशासन के द्वारा एक स्पेशल ट्रेन 08263/08264 बिलासपुर-काचेगुडा-बिलासपुर के मध्य 04 फेरो के लिये चलाई जायेगी । यह स्पेशल ट्रेन बिलासपुर से दिनांक 23, 30 जून, 2025, 07 एवं 14 जुलाई 2025 को काचेगुडा के लिए रवाना होगी । इसी प्रकार काचेगुडा से दिनांक 24, जून, 2025, 01, 08 एवं 15 जुलाई 2025 को बिलासपुर के लिए रवाना होगी। इस स्पेशल ट्रेन में 2 एसएलआरडी, 05 सामान्य, 07 स्लीपर, 02 एसी थ्री, सहित कुल 16 कोच रहेगी । बिलासपुर से गाड़ी संख्या 08263 बिलासपुर से 10.05 बजे रवाना होकर भाटापारा आगमन 10.43 बजे प्रस्थान 10.45 बजे, रायपुर आगमन 11.40 बजे प्रस्थान 11.45 बजे, दुर्ग आगमन 12.40 बजे प्रस्थान 12.45 बजे, राजनांदगाँव आगमन 13.09 बजे प्रस्थान 13.11 बजे, डोंगरगढ़ आगमन 13.34 बजे प्रस्थान 13.36 बजे, गोंदिया आगमन 14.35 बजे प्रस्थान 14.45 बजे, वड्सा आगमन 15.58 बजे प्रस्थान 16.00 बजे, चांदाफेर्ट आगमन 17.58 बजे प्रस्थान 18.00 बजे, बलहारशाह आगमन 18.45 बजे प्रस्थान 18.55 बजे, सिरपुर कागजनगर आगमन 19.43 बजे प्रस्थान 19.45 बजे, मंचिर्याल आगमन 20.23 बजे प्रस्थान 20.25 बजे, रामगुंडम आगमन 20.48 बजे प्रस्थान 20.50 बजे, काजीपेट जंक्शन आगमन 22.03 बजे प्रस्थान 22.05 बजे, चरलापल्ली आगमन 23.50 बजे प्रस्थान 23.55 बजे, मुजफ्फरपुर आगमन 00.38 बजे प्रस्थान 00.40 बजे, एवं काचेगुडा 01.30 बजे पहुँचेगी ।

काचेगुडा एवं बिलासपुर के मध्य चलने वाली गाड़ी की विस्तृत समय-सारणी निम्नानुसार है :-

काचेगुडा से गाड़ी संख्या 08264 काचेगुडा से 04.30 बजे रवाना होकर मुजफ्फरपुर आगमन 04.43 बजे प्रस्थान 04.45 बजे, चरलापल्ली आगमन 05.28 बजे प्रस्थान 05.30 बजे, काजीपेट जंक्शन आगमन 07.08 बजे प्रस्थान 07.10 बजे, रामगुंडम आगमन 08.18 बजे प्रस्थान 08.20 बजे, मंचिर्याल आगमन 08.38 बजे प्रस्थान 08.40 बजे, सिरपुर कागजनगर 09.58 बजे प्रस्थान 10.00 बजे, बलहारशाह आगमन 11.45 बजे प्रस्थान 11.55 बजे, चांदाफेर्ट आगमन 12.15 बजे प्रस्थान 12.17 बजे, वड्सा आगमन 14.30 बजे प्रस्थान 14.35 बजे, गोंदिया आगमन 16.15 बजे प्रस्थान 16.25 बजे, डोंगरगढ़ आगमन 17.28 बजे प्रस्थान 17.30 बजे, राजनांदगाँव आगमन 18.05 बजे प्रस्थान 18.07 बजे, दुर्ग आगमन 18.50 बजे प्रस्थान 18.55 बजे, रायपुर आगमन 19.30 बजे प्रस्थान 19.35 बजे, भाटापारा आगमन 20.25 बजे प्रस्थान 20.27 बजे एवं बिलासपुर 21.35 बजे पहुँचेगी।

विश्व योग दिवस पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने किया योग कार्यक्रम का आयोजन

दुर्ग। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण बिलासपुर द्वारा प्लान ऑफ एक्शन के तहत जारी वार्षिक कैलेन्डर के अनुसार माननीय मुख्य न्यायाधिपति/मुख्य संरक्षक छ.ग. उच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में 21 जून 2025 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग द्वारा जिला एवं सत्र न्यायालय दुर्ग के नवीन सभागार में योगा फोर वन अर्थ वन हेल्थ की थीम पर आधारित एक विशेष योग सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा विधिक सेवाओं के प्रति नागरिकों को जागरूक करना था। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः समय 7 बजे हुई, जिसमें प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ जिला न्यायालय के समस्त सम्मानीय न्यायाधीशगण, समस्त अधिवक्तागण, प्राधिकरण के सचिव, न्यायालयीन कर्मचारीगण, प्राधिकरण के कर्मचारीगण तथा पैरालीगल वालंटियर्स उपस्थित हुए। उक्त योग कार्यक्रम में सम्मिलितजनों को योगासन सिखाए जाने के लिए आर्ट ऑफ लिविंग भिलाई के मास्टर ट्रेनर को योग प्रशिक्षक के रूप में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। योग गुरू/प्रशिक्षक द्वारा प्रतिभागियों को विभिन्न योगासनों, प्राणायाम तथा ध्यान तकनीकों का अभ्यास कराया गया।

धनोरा में दुर्ग विकास खण्ड स्तरीय शाला प्रवेश उत्सव सम्पन्न

शाला परिसर में एक पेड़ मां के नाम के तहत पौधा रोपण किया..

दुर्ग, 21 जून (आरएनएस)। दुर्ग ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला परिसर, धनोरा में दुर्ग विकासखंड स्तरीय शाला प्रवेश उत्सव कार्यक्रम का हुआ। कार्यक्रम में दुर्ग सांसद विजय बघेल, दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर, अहिवारा विधायक डोमन लाल कोर्सेवाडा सम्मिलित होकर विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञान दायिनी मां सरस्वती के तैल चित्र पर पूजा अर्चना के साथ किया गया। इस अवसर पर कक्षा पहली छठवीं एवं नवमी के नवप्रवेशी विद्यार्थियों का तिलक लगाकर मिठाई खिलाकर उनका आत्मीय स्वागत किया और शाला गणवेश एवं पाठ्यपुस्तकों का वितरण कर उन्हें शिक्षा के नए पथ पर शुभकामनाएं दी। सरस्वती निःशुल्क साइकिल योजना के अंतर्गत पात्र छात्राओं को निःशुल्क साइकिल वितरित की गई, साथ ही एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण कर मातृ सम्मान और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। समग्र शिक्षा योजना अन्तर्गत दिव्यांग विद्यार्थियों को सहायक उपकरण वितरण किया गया। इस अवसर पर दुर्ग सांसद विजय बघेल ने सभी बच्चों पालकों, गुरुजनों को बधाई देते हुए कहा आज शासकीय स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे अभाव के बावजूद भी मेरिट में स्थान बनाते हैं। इस गुरु जनों के बदौलत ही है। प्राइवेट स्कूलों में बच्चे बड़ी-बड़ी फीस देकर पढ़ाई करते हैं सरकारी स्कूल के बच्चे भी उसकी बराबरी करते हुए अच्छा परिणाम लाते हैं। शासकीय स्कूल में बच्चे अनुशासित और संस्कारवान मेहनती, होते है आज कल स्कूल कॉलेज में बेटियों की संख्या दिखाई देती है यह सब देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के सफल क्रियान्वयन का परिणाम है। आजकल बेटियां ज्यादा पढ़ाई लिखाई कर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। बघेल ने कहा आज हमें बेटा पढ़ाओ बेटा बचाओ अभियान भी चलना होगा जिससे हमारे बेटे बेटी के बराबार पढ़ाई लिखाई कर आगे बढ़ सके । जिससे संतुलन बना रहा है साथ ही एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वृक्षा रोपण के लिए लोगो को जागरूक किया। इस अवसर पर विधायक ललित चंद्राकर ने कार्यक्रम को संबोधित करते कहा आज का दिन बहुत अच्छा है आज हम सब अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रहे है एक पृथ्वी एक स्वास्थ के लिए योग ज़रूरी हैं आप सभी से निवेदन है कि योग को अपने दैनिक जीवन में अपनाएं। 16 जून से छत्तीसगढ में शाला प्रवेशोत्सव मनाया जा रहा है. बच्चों में शैक्षणिक प्रगति के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के साथ ही अधोसंरचना का विकास किया जा रहा है। मन में उत्साह, उमंग लिए घर से पहली बार स्कूल जा रहे बच्चे हो या गर्मी की छुट्टी बिता कर आगे की कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी. आगे बढ़ने की उम्मीद के साथ अपने सपनों को साथ लिए मेहनत कर रहे इन बच्चों से उम्मीदें सभी को होती है। सरकार और अभिभावकों की एक बड़ी जिम्मेदारी होती है कि इन बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलने के साथ ही उनका व्यक्तित्व विकास भी हो. सभी वर्गों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले इसके लिए छत्तीसगढ़ सरकार बच्चों की शुरूआती शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ ही उनके आगे की शिक्षा के लिए भी सुविधाएं उपलब्ध करा रही हैं। चंद्राकर ने कहा विष्णुदेव की सरकार शिक्षा के क्षेत्र में हर सम्भव सहायता करने को तत्पर हैं ।

शिविरों के माध्यम से जनजातीय समाज के लोगों को मिल रहा है निरंतर सौगात

जनपद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित अन्य जनप्रतिनिधियों के अलावा अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण हुए शामिल

बालोद। धरती आबा जनभागीदारी अभियान के अंतर्गत बालोद जिले के सभी विकासखण्डों के अलग-अलग स्थानों पर प्रतिदिन आयोजित होने वाले लाभ संतृप्ति शिविरों के माध्यम से हितग्राहियों एवं ग्रामीणों को निरंतर सौगात मिल रहा है। इसके अंतर्गत आज जिले के डौण्डी विकासखण्ड के अंतिम छोर पर स्थित आदिवासी बाहुल्य ग्राम गुदुम में आयोजित लाभ संतृप्ति शिविर में आदिवासी वर्ग के लोगों के बहुप्रतीक्षित मांगों के पूरा होने तथा उन्हें शासकीय योजनाओं का लाभ एवं सुविधा मिलने से हितग्राहियों एवं ग्रामीणों में हर्ष व्याप्त है। शिविर में विभिन्न शासकीय योजनाओं से लाभान्वित हुए लोगों के अलावा आदिवासी समाज के लोगों ने लाभ संतृप्ति शिविर को जनजातीय समाज के लोगों के लिए अत्यंत लाभकारी एवं उपयोगी बताते हुए शिविर के आयोजन की भूरी-भूरी सराहना की। शिविर में पेंशन योजना से लाभान्वित ग्राम कुंजकन्हार निवासी श्रीमती खेमिन बाई विधवा पेंशन योजना से लाभ लेने के लिए उनके सभी प्रक्रिया पूरा होने पर बहुत ही प्रसन्नचित नजर आ रही थी। इसी तरह शिविर में ग्राम कुंजकन्हार निवासी आनंद राम एवं ग्राम गुदुम निवासी श्रीमती काजल, नवली और सत्यवती ने श्रम कार्ड बनाने की प्रक्रिया पूरा होने पर शिविर के आयोजन की मुक्तकंठ से सराहना की। आज गुदुम में आयोजित लाभ संतृप्ति शिविर में जनपद पंचायत डौण्डी के अध्यक्ष मुकेश कौड़ो, जनपद उपाध्यक्ष भोलाराम नेताम, जनपद सदस्य तुलेश्वर हिचामी सहित अन्य जनप्रतिनिधियों के अलाव ग्राम पंचायत गुदुम, कारूटोला और अवारी, कुंआगोदी, मरकाटोला, सुरडोंगर सहित आसपास के ग्राम पंचायत के सरपंचगणों के अलावा अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण तथा हितग्राहीजन उपस्थित थे। केन्द्र सरकार के द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में सेवाओं और अन्य बुनियादी ढाँचों को परिपूर्णता प्रदान करने तथा उनके व्यक्तिगत अधिकारों से परिपूर्ण करने के उद्देश्य से जिले में प्रतिदिन आयोजित होने वाली इन शिविरों के माध्यम से जनजाति परिवार के लोगों को 17 मंत्रालयों के 25 सेवा एवं योजनाओं से निरंतर लाभान्वित किया जा रहा है।

सीडीपी प्लान तैयार कर सभी 70 वार्डो में समान दृष्टि से दलगत राजनीति से ऊपर उठकर जन अपेक्षित विकास करने नगर निगम कृत संकल्पित - महापौर

रायपुर - आज नगर पालिक निगम रायपुर के मुख्यालय भवन महात्मा गांधी सदन के तृतीय तल सभाकक्ष में महापौर श्रीमती मीनल चैबे ने नगर निगम लोककर्म विभाग अध्यक्ष श्री दीपक जायसवाल, अपर आयुक्त श्री विनोद पाण्डेय, मुख्य अभियंता श्री यू.के. धलेन्द्र, अधीक्षण अभियंता श्री राजेष राठौर, श्री संजय बागड़े, उपायुक्त श्री जसदेव सिंह बाबरा, कार्यपालन अभियंता श्री अंषुल शर्मा जुनियर, सभी जोन कमिष्नरो, कार्यपालन अभियंताओं टाउन प्लानर्स जोन 1 हेतु जीटी डिजाइन स्टुडियो, जोन 2 हेतु पिल्लीवार एण्ड एसोसिएट्स, जोन 3 हेतु रूपाल संघवी एण्ड एसोसिएट्स, जोन 4 हेतु आर्किटेक्ट संदीप नीना एण्ड एसोसिएट्स, जोन 5 हेतु राजहंस कंसलटेंट्स टेक्नोकेट प्रा.लि., जोन 6 हेतु एस एण्ड जे एसोसिएट्स, जोन 7 हेतु पिल्लीवार एण्ड एसोसिएट्स, जोन 8 हेतु बिल्डक्राप्ट इंजीनियरिंग एण्ड आर्किटेक्चर, जोन 9 हेतु जीटी डिजाइन स्टुडियो और जोन 10 हेतु नवीन शर्मा एण्ड एसोसिएट्स के प्रतिनिधियों की वार्ड डेव्हल्पमेंट प्लान और सीटी डेव्हल्पमेंट प्लान की प्रारंभिक तैयारी को लेकर बैठक लेकर समीक्षा करते हुए आवष्यक निर्देष दिये।

महापौर श्रीमती मीनल चैबे ने निर्देष दिये कि टाउन प्लानर्स फील्ड में जाकर वार्ड पार्षदो से समन्वय कर वार्डो में निरीक्षण कर

जन अपेक्षित विकास समान दृष्टि से करने वार्ड डेव्हल्पमेंट प्लान और सिटी डेव्हल्पमेंट प्लान का प्रस्ताव शीघ्र तैयार करें। वार्ड डेव्हल्पमेंट प्लान और सिटी डेव्हल्पमेंट प्लान में वार्ड पार्षदो द्वारा दिये गये सुझावो को भी समाहित कर प्रस्ताव तैयार किया जाये।

महापौर ने टाउन प्लानर्स को निर्देषित किया कि रायपुर में विभिन्न स्थानो पर बारिष में होने वाले जलभराव के स्थानो पर निरीक्षण कर जलभराव के कारणो की जानकारी सहित जलभराव को रोकने क्या उपाय नगर निगम द्वारा किये जा सकते है उनके प्लान को भी अपने प्रस्ताव में समाहित करे ।

महापौर ने कहा कि रायपुर नगर निगम सभी 70 वार्डो का राजधानी शहर स्मार्ट सिटी के अनुरूप समान दृष्टि से जनअपेक्षित विकास दलगत राजनीति की भावना से ऊपर उठकर करने हेतु कृत संकल्पित है। वार्ड डेव्हल्पमेंट प्लान और सिटी डेव्हल्पमेंट प्लान के माध्यम से नगर पालिक निगम रायपुर क्षेत्र में सभी 70 वार्डो में आमजनों तक विकास की गंगा पहुंचेगी एवं तेजी के साथ शहर का राजधानी स्मार्ट सिटी के रूप में जनअपेक्षित विकास होगा। इसमें पाईप लाईन , सडक बत्ती, उद्यान, सामुदायिक भवन अन्य भवनों, मार्गो, नाले, नालियो, पुलियो सहित अन्य विकास कार्यो सौंदर्यीकरण कार्यो को योजनाबद्ध तरीके से आमजनो के मध्य सुव्यवस्थित समय सीमा में करने मार्ग प्रषस्त होगा और मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व और उपमुख्यमंत्री नगरीय प्रषासन और विकास विभाग श्री अरूण साव के मार्गदर्षन में रायपुर शहर को नगर निगम के माध्यम से शीघ्र राजधानी स्मार्ट सिटी के अनुरूप सुन्दर स्वच्छ और हरित बनाने का मार्ग प्रषस्त होकर परिकल्पना जनअपेक्षित रूप में साकार होगी।

बस्तर-सरगुजा समेत 23 जिलों में बिजली गिरने का यलो अलर्ट

रायपुर-दुर्ग सहित 10 जिलों में साामन्य रहेगा मौसम, प्रदेश में 6 दिनों में 22.69 मिलीमीटर बारिश

एचएसआरपी आर्डर की संख्या दोगुनी करने के निर्देश

रायपुर

वाहनों में एचएसआरपी नंबर प्लेट नहीं लगाने पर पुलिस एवं प्रवर्तन अमले के द्वारा होगी चालानी कार्रवाई

सचिव सह परिवहन आयुक्त एस. प्रकाश की अध्यक्षता में आज यहां मंत्रालय महानदी भवन में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट के अनुबंधित कंपनियों के प्रतिनिधि एवं समस्त परिवहन अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में सचिव सह परिवहन आयुक्त एस.प्रकाश द्वारा बिना एचएसआरपी वाले वाहनों पर सख्त चालानी कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए।

सचिव परिवहन एस. प्रकाश ने एचएसआरपी आर्डर में कमी आने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए समस्त परिवहन अधिकारियों को पुलिस प्रशासन से समन्वय कर संयुक्त जांच अभियान चलाने और चालानी कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने धमतरी, जशपुर, दुर्ग, अंबिकापुर, बैकुण्ठपुर, रायपुर, बिलासपुर जिलों के परिवहन अधिकारियों से

विस्तारपूर्वक चर्चा की और आगामी दिनों में एचएसआरपी आर्डर की संख्या दोगुनी करने हेतु कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए।

बैठक में समस्त परिवहन अधिकारियों को एचएसआरपी वेंडर से समन्वय कर तहसील मुख्यालय, ग्रामीण कस्बों एवं भीड़ वाले जगहों जैसे-इंडस्ट्रियल, एजुकेशन इंस्टीट्यूट क्षेत्रों में लगातार कैम्प आयोजित करने के निर्देश दिए गए। परिवहन सचिव सह आयुक्त ने दुर्ग जिला अंतर्गत भिलाई स्टील प्लांट (बीएसपी) में कार्यरत कर्मचारियों के स्टॉफपार्किंग में कैम्प आयोजित करने हेतु क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, दुर्ग को निर्देशित किया गया। साथ ही एचएसआरपी लगाने एवं नियम / अधिनियम की जानकारी हेतु लोगों में जागरूकता लाने पेट्रोल पंप या अन्य भीड़ वालें स्थानों पर बैनर / पोस्टर के माध्यम से जानकारी प्रसारित करने के निर्देश दिए गए।

बैठक में निर्देश दिया गया कि अनुबंधित कम्पनियां जिला मुख्यालय के साथ-साथ तहसील मुख्यालय में भी कंपनी द्वारा संचालित स्थायी फिटमेंट सेंटर स्थापित करने के साथ मैनपॉवर भी बढ़ाएं। इसके अतिरिक्त समस्त परिवहन अधिकारियों को समस्त फिटमेंट सेंटरों का लगातार भौतिक निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए। आगामी सप्ताह में पुनः समीक्षा बैठक ली जावेगी।

नया रायपुर में सीमा सुरक्षा बल ने मनाया योग दिवस

0-रचा अनुशासन और ऊर्जा का संगम

रायपुर, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) द्वारा 11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आज विशेष संक्रिया कमान मुख्यालय, नया रायपुर में बड़े ही उल्लास और अनुशासन के साथ मनाया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ और ओडिशा के विभिन्न नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में तैनात बल के 1,000 से अधिक कार्मिकों ने एक साथ योगाभ्यास कर यह संदेश दिया कि योग न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए, बल्कि सामूहिक मनोबल और आत्मबल के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम का आयोजन सीमा सुरक्षा बल के उच्च अधिकारियों की देखरेख में प्रातःकालीन समय में किया गया।

एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य की थीम पर नागरिक आपूर्ति निगम ने मनाया योग दिवस

निगम अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव बोले - योग अपनाएं, तनाव और रोगों से पाएं मुक्ति

रायपुर, । 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर नागरिक आपूर्ति निगम में राज्य स्तरीय योग शिविर का आयोजन उत्साह और अनुशासन के साथ किया गया। इस अवसर पर निगम अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव ने योग के वैश्विक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि योग आज केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के लिए स्वस्थ जीवन का मार्ग बन चुका है।

प्रातः 7 बजे प्रारंभ हुए इस योग शिविर में श्री श्रीवास्तव के आह्वान पर निगम मुख्यालय के अधिकारी-कर्मचारी एक साथ योगाभ्यास में सम्मिलित हुए। प्रशिक्षकों के निर्देशन में विविध योग क्रियाओं का अभ्यास किया गया।

श्री श्रीवास्तव ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का विज्ञान है। यह जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी। इस वर्ष की थीम योग फॉर वन अर्थ, वन हेल्थ है, जो पृथ्वी और मानव स्वास्थ्य के गहरे संबंध को दर्शाती है।

श्री श्रीवास्तव ने यह भी बताया कि वर्तमान में भारत की योग अर्थव्यवस्था 20 करोड़ रुपये से अधिक की हो चुकी है तथा 190 देशों में 1 लाख से अधिक प्रमाणित योग शिक्षक कार्यरत हैं। देश के लगभग 2.5 करोड़ घरों में नियमित योग को अपनाया जा चुका है।

महाविद्यालयों में कटअप मार्क हाई होने से प्रवेश के लिए मची मारा-मारी

प्रवेश के लिए छात्रों का पंजीकरण शुरू, 12 वीं के प्राप्तांक आधार पर

ऑटोनामस कॉलेज ने जारी मेरिट लिस्ट

-साइंस कॉलेज में एडमिशन के लिए मची होड़

रायपुर, रविशंकर विश्वविद्यालय के संबंद्ध डेढ़ सौ महाविद्यालय में छात्रों के प्रवेश हेतु पंजीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है। राजधानी स्थित स्वायत्तशासी महाविद्यालय छत्तीसगढ़, डिग्री कॉलेज एवं साइंस कॉलेज में खुद के पोर्टल पर आवेदन मंगाया गया है। साइंस कॉलेज रायपुर में एडमिशन के लिए होड़ मची हुई है। मिली जानकारी के अनुसार छत्तीसगढ़ महाविद्यालय में एक एडमिशन लिस्ट निकाल दी गई है। विश्वविद्यालय द्वारा इस समय महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए पंजीकरण शुरू कर दिया है। प्रवेश की प्रक्रिया आगामी माह तक चलेगी। प्रध्यापकों के अनुसार इस वर्ष कटअप मार्क हाई जाने के कारण यहां पर प्रवेश के लिए मारा-मारी है। साइंस कॉलेज रायपुर में दो चरणों में 7 लिस्ट जारी होगी। यहां पर कुल 934 सीट है, इसके लिए 5 हजार से अधिक फार्म जमा हो चुके हैं। डिग्री गर्ल्स कॉलेज रायपुर में करीब 1200 सीटें है, इनमें 5 हजार फार्म आ चुके हैं। मेरिट लिस्ट जारी हो चुकी है, सीट खाली रहने पर दूसरी लिस्ट जारी होगी। छत्तीसगढ़ कॉलेज में बायो एवं मेट्स की 155 सीट है। बी-कॉम के 125 सीट है, यहां पर मेरिट लिस्ट के लिए होड़ मची हुई है। छत्तीसगढ़ कॉलेज द्वारा मेरिट लिस्ट जारी की गई है।

विशाल मेगा मार्ट द्वारा सड़क पर वाहन पार्किंग करने पर 5000 रूपये ई चालान

रायपुर, नगर पालिक निगम रायपुर के आयुक्त विश्वदीप के निर्देश पर नगर निगम जोन 7 जोन कमिश्नर राकेश शर्मा, कार्यपालन अभियंता ईश्वर लाल टावरे, उप अभियंता नगर निवेश सुरुचिका मिश्रा की उपस्थिति में जनशिकायत स्थल पर सही पाए जाने पर जोन 7 क्षेत्र अंतर्गत शहीद चूड़ामणि नायक वार्ड क्षेत्र के तहत जीई मार्ग के किनारे गुरू घासीदास प्लाजा क्षेत्र में विशाल मेगा मार्ट के संचालक पर सड़क पर वाहन पार्किंग करने से हो रही

जनअसुविधा पर तत्काल स्थल पर भविष्य के लिए कड़ी कार्यवाही की चेतावनी देते हुए 5000 रूपये का ई चालान काटा गया और विशाल मेगा मार्ट के संचालक को व्यवस्थित वाहन पार्किंग करवाने एवं तत्काल सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था करने के स्थल पर जोन नगर निवेश अधिकारियों ने कड़े निर्देश दिए ।

रेल यात्रियों के लिए तत्काल बुकिंग के नियमों में परिवर्तन करेगा रेलवे एक जुलाई से

रायपुर,)। भारतीय रेल अपने सभी रेलवे जोनों में तत्काल टिकट के नियमों में एक जुलाई से परिवर्तन करने जा रहा है। मिली जानकारी के अनुसार अब तत्काल बुकिंग के लिए यात्री को आईआरसीटीसी में अपने एकाउंट का आधार लिंक करना होगा। ओटीपी वेरीफिकेशन किये जाने के बाद ही तत्काल बुकिंग का लाभ रेल यात्री को मिलेगा। बिना आधार और ओटीपी के बिना अब रेल यात्री तत्काल बुकिंग की सुविधा का लाभ एक जुलाई के बाद नहीं ले सकेंगे। रेलवे पर यात्रियों का यह आरोप है कि रेलवे एजेंट्स बल्क की संख्या में तत्काल टिकट पहले से आरक्षित करा लेते जिसकी वजह से मूल यात्रियों को उक्त सुविधा का लाभ न हीं मिल पाता। नये नियमों के अनुसार रेलवे अपने बुकिंग एजेंटों को अब तत्काल सुविधा का लाभ सुबह साढ़े दस बजे के बाद ही कराएगी। नये सिस्टम में ओटीपी आधारित वेरीफिकेशन की शुरूआत रेलवे 15 जुलाई से शुरू करेगी। आधार लिकिंग के लिए आईआरसीटीसी एकाउंट को यात्री के मोबाइल नंबर से जुड़ा रहना जरूरी होगा। ओटीपी आने के बाद ही यात्री की तत्काल टिकट कंफर्म होगी।

आईटी के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है छत्तीसगढ़ : भुवनेश

आधार से सध रहा है सुशासन और डिजिटल गवर्नेंस का लक्ष्य : निहारिका बारिक सिंह

रायपुर संवाददात।

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण के क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद द्वारा आज राजधानी रायपुर स्थित न्यू सर्किट हाउस के कन्वेंशन हॉल में आधार से अधिकतम लाभ प्राप्त करना विषय पर एक दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में आधार के व्यापक और प्रभावी उपयोग को प्रोत्साहित करना है। साथ ही आधार की उपयोगिता को जन-कल्याण की योजनाओं से जोड़ते हुए अधिक पारदर्शी एवं डिजिटल गवर्नेंस की दिशा में आगे बढ़ना है। इस महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन मुख्य सचिव अमिताभ जैन के मार्गदर्शन में किया गया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी भुवनेश कुमार ने कहा कि आई.टी. के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ तीव्र गति से प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि देश में लगभग 140 करोड़ आधार बने हैं, जिसकी सहायता से हितग्राहियों को सीधे लाभ पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में आधार आम नागरिकों की प्रगति का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है। उन्होंने जानकारी दी कि भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा आधार एनरोलमेंट और अपडेशन के लिए नवाचार का उपयोग कर नया साफ्टवेयर बना कर पूर्ण प्रक्रिया को ऑनलाइन किया जा रहा है, ताकि आधार बनाने की प्रक्रिया में होने वाली दिक्कत की आशंका को कम किया जा सके। आधार को और अधिक विश्वसनीय एवं प्रभावी बनाने के लिए जन्म प्रमाण पत्र, पेन कार्ड, पासपोर्ट, मनरेगा, पी.डी.एस. आदि अनेक सेवाओं से इन्टीग्रेट किया जा रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती निहारिका बारिक सिंह ने कहा कि आधार से सुशासन और डिजिटल गवर्नेंस का लक्ष्य साधने में मदद मिल रही है। आधार, भारत का सबसे

परिवर्तनकारी डिजिटल पहचान मंच बन चुका है, जिसकी सहायता से शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया जा रहा है। उन्होंने आधार की भूमिका को समावेशी, पारदर्शी और उत्तरदायी शासन की नींव बताते हुए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली, पेंशन, मनरेगा मजदूरी भुगतान, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं सहित कई सेवाओं में आधार का सफल इंटीग्रेशन किया है। इसके अलावा, ई-डिस्ट्रिक्ट, लोक सेवा गारंटी और राज्य डी.बी.टी. पोर्टल जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों में आधार की भूमिका को और अधिक सशक्त किया जा रहा है।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए रीजनल ऑफिस हैदराबाद की डिप्टी डायरेक्टर जनरल श्रीमती पी. संगीता ने बताया कि आधार पिछले दो दशकों में अभूतपूर्व परिवर्तन से गुजर चुका है। यह अब सिर्फ12 अंकों की संख्या नहीं रह गया है, बल्कि यह एक समग्र सुशासन और डिजिटल भारत की आधारभूत संरचना बन चुका है। आधार से संबंधित नियम और नीतियों में समय-समय पर बदलाव होते रहे हैं, जिसे सभी हितधारकों के साथ साझा किया जाता है। यूआईडीएआई मुख्यालय के डीडीजी विवेक चंद्र वर्मा एवं विनोद कुमार सिंह ने कार्यशाला में आधार उपयोग में हाल के समय में की जा रही है पहल पर व्याख्यान दिया। उन्होंने आधार अधिनियम 2016 के प्रावधानों के तहत लाभ वितरण, प्रमाणीकरण सुविधाएं और आधार सक्षम भुगतान प्रणाली की जानकारी दी। कार्यशाला में यूआईडीएआई मुख्यालय के निदेशक कर्नल निखिल सिन्हा ने नामांकन एवं अद्यतन पारिस्थितिकी तंत्र में हाल के समय में विकास और नई नीतियां विषय पर प्रस्तुति दी। वहीं, निदेशक लेफ्टिनेंट कर्नल संजीव यादव ने आधार प्रमाणीकरण अवलोकन एवं मुख्य बातें साझा करते हुए छत्तीसगढ़ सहित अन्य राज्यों की तुलनात्मक जानकारियाँ दीं। इनिशिएटिव एण्ड बेस्ट प्रेक्टिसेस के अंतर्गत, बेंगलुरु के राजस्व आयुक्त सुनील कुमार पोम्माला ने भूमि प्रबंधन प्रणाली में आधार के तकनीकी उपयोग और कर्नाटक राज्य में कृषि से जुड़ी योजनाओं में आधार के सकारात्मक प्रभाव पर आधारित अनुभव साझा किए।

विकास उपाध्याय ने किया योगाभ्यास

रायपुर, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पूर्व विधायक एवं पूर्व एआईसीसी सचिव विकास उपाध्याय ने आज योगाभ्यास कर नागरिकों को स्वस्थ और संतुलित जीवन की ओर प्रेरित किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि योग सिर्फ शारीरिक कसरत नहीं, बल्कि मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन का माध्यम है। विकास उपाध्याय ने कहा, आज की भागदौड़ और तनाव भरी ज़िंदगी में योग ही ऐसा साधन है, जो हमें भीतर से सशक्त करता है। यह भारत की प्राचीन परंपरा है, जिसे अब वैश्विक पहचान मिली है-और हमें गर्व के साथ इसे अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए।

उन्होंने युवाओं से विशेष आग्रह किया कि नियमित योग न केवल शरीर को रोगमुक्त रखता है, बल्कि सोच और दृष्टिकोण को भी सकारात्मक बनाता है। हर व्यक्ति को दिन में कुछ समय अपने स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए देना चाहिए।

सहायक संचालक उद्योग भर्ती के लिए परीक्षा 12 जुलाई को

रायपुर, सहायक संचालक उद्योग भर्ती परीक्षा के लिए 12 जुलाई को लिखित परीक्षा होगी। पहले यह परीक्षा 6 जुलाई को होने वाली थी। राष्ट्रीय अवकाश की वजह से परीक्षा की तिथि में परिवर्तन किया गया है। व्यापम द्वारा आयोजित उक्त परीक्षा में कुल 30 पदों पर भर्ती होगी। इसके लिए व्यापंम ने अप्रैल में आवेदन मंगाए थे। उक्त पदों के लिए बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों ने आवेदन किये हैं।

प्रयास आवासीय विद्यालय अंतर्गत कक्षा 9वीं में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग शेड्यूल जारी

कोरबा । प्रयास आवासीय विद्यालयों में वर्ष 2025-26 में कक्षा 9वीं में प्रवेष हेतु विद्यार्थियों की वर्गवार मेरिट एवं प्रतीक्षा सूचीविभागीय वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है। साथ हीकाउंसिलिंग की तिथि घोषित कर दी गई है।

लोकशक्ति
www.lokshakti.in

संपादकीय

ईरान ने एयर स्पेस खोला : मोदी की कूटनीतिक जीत

ईरान में लगभग 6 हज़ार भारतीय नागरिक रहते हैं। इनमें से आधे के करीब छात्र हैं। इन सबको स्वदेश लाने के लिए सरकार ने ऑपरेशन सिंधु शुरू किया है। ईरान चलती जंग के बीच अपना एयरस्पेस भारत के लिए खोल दे, ये भारत की कूटनीति की ताकत का बड़ा सबूत है। युद्ध के मैदान से ये खबर किसी को भी हैरान करेगी कि ईरान ने न सिर्फएयरस्पेस खोला, बल्कि भारतीय छात्रों को वापस पहुंचाने के लिए अपने विमान भी दिए। ईरान की ये पहल जवाब है उन लोगों को, जो कहते थे कि मोदी की नेतन्याहू से दोस्ती की वजह से ईरान नाराज़ है। अब ये साबित हो गया कि ईरान न सिर्फभारत का दोस्त है, बल्कि भारत के लिए असाधारण कदम उठाने को भी तैयार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ये बड़ी उपलब्धि है। ये भारत के तिरंगे का कमाल है। आपको याद होगा, कई साल पहले जब भारतीय छात्र यूक्रेन में फंस गए थे, तो मोदी ने जेलेंस्की और पुतिन दोनों से बात करके थोड़ी देर के लिए युद्ध रुकवाया था।

दूसरों की खुशहाली से परेशान

वह दूसरों की खुशहाली से परेशान है,
दुनिया की चमक धमक से हैरान हैद्य

कभी ईमान का पसीना बहाया नहीं
कोई कैसे है धनवान इससे परेशान है।

रीत जिसने खोया उसी ने पाया है,
इसी धरती पर ही दीन से ईमान हैद्य

दुनिया की शान देख ये न सोचो,
भाग्य सदैव कर्म से बलवान हैद्य
जो जग में चमकता सितारा दिखता है,
लुटा दी अपनी जिंदगी तब ये शान है।

चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात है,
फिर तू क्यों इतना इसी से हैरान हैद्य

अंधेरे के बाद रोशनी होती ही है संजीव,
मत हो हैरान ईश्वर सब पर एक से मेहरबान है।

संजीव ठाकुर,

QR CODE SCAN
कर प्रेमेन्द्र अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तकें पढ़िये ऑनलाईन

PM : 2024 - Vishwa Sarkar Ka Vikalp

Modimaya_ Vaidik_Netritva

Rashtriya Ekta

DLF-Vadra-Bhrasht Tantra

Silent Assassins Jan11,1966

Accursed & Jihadi Neighbour

नया मानव : नया विश्व के प्रणेता थे आचार्य महाप्रज्ञ

ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक अनेकों साधकों, आचार्यों, मनीषियों, दार्शनिकों, ऋषियों ने अपने मूल्यवान अवदानों से भारत की आध्यात्मिक परम्परा को समृद्ध किया है, उनमें प्रमुख नाम रहा है -आचार्य महाप्रज्ञ। अपने समय के महान् दार्शनिक, धर्मगुरु, संत एवं मनीषी के रूप में जिनका नाम अत्यंत आदर एवं गौरव के साथ लिया जाता है। वे ईश्वर के सच्चे दूत थे, जिन्होंने जीवनमूल्यों से प्रतिबद्ध एक आदर्श समाज रचना का साकार किया है, वे ऐसे क्रांतद्रष्टा धर्मगुरु थे, जिन्होंने देश की नैतिक आत्मा को जागृत करने का भगीरथ प्रयत्न किया। वे एक अनूठे एवं गहन साधक थे, जिन्होंने जन-जन को स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार की क्षमता प्रदत्त की। वे ऊर्जा का एक पूंज थे, प्रतिभा एवं पुरुषार्थ का पर्याय थे। इन सब विशेषताओं और विलक्षणताओं के बावजूद उनमें तनिक भी अहंकार नहीं था। आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म हिन्दू तिथि के अनुसार विक्रम संवत 1977, आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी को राजस्थान के झुंझनू जिले के एक छोटे-से गांव टमकोर गाँव में हुआ था, जो इस वर्ष 23 जून, 2025 को हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ के ऐसे पावन एवं विलक्षण अस्तित्व थे जिन्होंने युग के कैनवास पर नए सपने उतारे, जिन्होंने धर्मक्रांति के साथ व्यक्ति एवं समाजक्रांति का शंखनाद किया। वे व्यक्ति नहीं, संपूर्ण संस्कृति थे। दर्शन थे, इतिहास थे, विज्ञान थे। आपका व्यक्तित्व अनगिन विलक्षणताओं का दस्तावेज रहा है। तपस्विता, यशस्विता और मनस्विता आपके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व में घुले-मिले तत्त्व थे, जिन्हें कभी अलग नहीं देखा जा सकता। आपकी विचार दृष्टि से सृष्टि का कोई भी कोना, कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। विस्तृत ललाट, करुणामय नेत्र तथा ओजस्वी वाणी-ये थे आपकी प्रथम दर्शन में होने वाली बाह्य पहचान। आपका पवित्र जीवन, पारदर्शी व्यक्तित्व और उम्दा चरित्र हर किसी को अभिभूत कर देता था, अपनत्व के घेरे में बाँध लेता था। आपकी आंतरिक पहचान थी-अंतःकरण में उमड़ता हुआ करुणा का सागर, सौम्यता और पवित्रता से भरा आपका कोमल हृदय। इन चुंबकीय विशेषताओं के कारण आपके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपकी अलौकिकता से अभिभूत हो जाता था और वह बोल उठता था-कितना अद्भुत! कितना विलक्षण!! कितना विरल!!! आपकी मेधा के हिमालय से प्रज्ञा के तथा हृदय के मंदरांचल से अनहद प्रेम और नम्रता के असंख्य झरने निरंतर बहते रहते थे। इसका मूल उद्गम केंद्र था-लक्ष्य के प्रति तथा अपने परम गुरु आचार्य तुलसी के प्रति समर्पण भाव।

आचार्य महाप्रज्ञ को हम बीसवीं एवं इक्कीसवीं सदी के एक ऐसी आलोकधर्मी परंपरा का विस्तार कह सकते हैं, जिस परंपरा को महावीर, बुद्ध, गांधी और आचार्य तुलसी ने आलोकित किया है। अतीत की यह आलोकधर्मी परंपरा धुंधली होने लगी, इस धुंधली होती परंपरा को आचार्य महाप्रज्ञ ने एक नई दृष्टि प्रदान की थी। इस नई दृष्टि ने एक नए मनुष्य का, एक नए जगत का, एक नए युग का सूत्रपात किया था। इस सूत्रपात का आधार आचार्य महाप्रज्ञ ने जहाँ अतीत की यादों को बनाया, वहीं उनका वर्तमान का पुरुषार्थ और भविष्य के सपने भी इसमें योगभूत बने। प्रेक्षाध्यान की कला और एक नए मनुष्य-आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व के जीवन-दर्शन को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए वे प्रयत्नशील थे। उनके इन प्रयत्नों में न केवल भारत देश के लोग बल्कि पश्चिमी राष्ट्रों के लोग भी जीवन के गहरे रहस्यों को जानने और समझने के लिए उनके इर्द-गिर्द देखे गये थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें बताया कि ध्यान ही जीवन में सार्थकता के फूलों को खिलाने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ जितने दार्शनिक थे, उतने ही बड़े एवं सिद्ध योगी भी थे। वे दर्शन की भूमिका पर खड़े होकर अपने समाज और देश की ही नहीं, विश्व की समस्याओं को देखते थे। जो समस्या को सही कोण से देखता है, वही उसका समाधान खोज पाता है। आचार्यश्री जब योग की भूमिका पर आरूढ़ होते थे, तो किसी भी समस्या को असमाहित नहीं छोड़ते। उन्होंने हिंसा, आतंक एवं युद्ध की समस्या के समाधान के लिये राजनीति, समाज और धर्म के लोगों मिल-जुलकर प्रयत्न करने का आह्वान किया। इसी ध्येय को लेकर उन्होंने समान विचारधारा के लोगों को एक मंच पर लाने का प्रयत्न किया और उसे नाम दिया अहिंसा समवाय।

आचार्य महाप्रज्ञ ने मानव चेतना के विकास के हर पहलू को उजागर किया। कृष्ण, महावीर, बुद्ध, जीसस के साथ ही साथ भारतीय अध्यात्म आकाश के अनेक संतों-आदि शंकराचार्य, कबीर, नानक, रैदास, मीरा आदि की परंपरा से ऐसे जीवन मूल्यों को चुन-चुनकर युग की त्रासदी एवं उसकी चुनौतियों को समाहित करने का अनूठा कार्य उन्होंने किया। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके प्रवचनों/विचारों से अस्पर्शित रहा हो। योग, तंत्र, मंत्र, यंत्र, साधना, ध्यान आदि के गूढ़ रहस्यों पर उन्होंने सविस्तार प्रकाश डाला है। साथ ही राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण, हिंसा, जातीयता, राजनीतिक अपराधीकरण, लोकतंत्र की विसंगतियों, संभावित परमाणु युद्ध का विश्व संकट जैसे अनेक विषयों पर भी अपनी क्रांतिकारी जीवन-दृष्टि प्रदत्त की है।

जीवन के नौवें दशक में आचार्य महाप्रज्ञ का विशेष जोर अहिंसा पर रहा। इसका कारण सारा संसार हिंसा के महाप्रलय से भयभीत और आतंकित होना था। जातीय उन्माद, सांप्रदायिक विद्वेष और जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं का अभाव-ऐसे कारण थे जो हिंसा को बढ़ावा दे रहे थे और इन्हीं कारणों को नियंत्रित करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ प्रयत्नशील थे। इन विविध प्रयत्नों में उनका एक अभिनव उपक्रम था-'अहिंसा यात्रा'। अहिंसा यात्रा ऐसा आंदोलन बना, जो समूची मानव जाति के हित का चिंतन कर रहा था। अहिंसा की योजना को क्रियान्वित करने के लिए ही उन्होंने पदयात्रा के सशक्त माध्यम को चुना। 'चरैवेति-चरैवेति चरन् वै मधु विंदति' उनके जीवन का विशेष सूत्र बन गया था। इस सूत्र को लेकर उन्होंने पाँच दिसंबर, 2005 को राजस्थान के सुजानगढ़ क्षेत्र से अहिंसा यात्रा को प्रारंभ किया, जो गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़, दिल्ली एवं महाराष्ट्र में अपने अभिनव एवं सफल उपक्रमों के साथ विचरण करते हुए असंख्य लोगों को अहिंसा का प्रभावी प्रशिक्षण दिया एवं हिंसक मानसिकता में बदलाव का माध्यम बनी। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को पोकरण परीक्षण के पश्चात अणुबम नहीं, अणुव्रत, हिंसा नहीं अहिंसा, युद्ध नहीं, अयुद्ध की प्रेरणा देकर उनकी जीवन-दिशा को बदलने वाले आचार्य महाप्रज्ञ ही थे।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ का जीवन इतना महान और महनीय था कि किसी एक लेख, किसी एक ग्रंथ में उसे समेटना मुश्किल है। यों तो आचार्य महाप्रज्ञ की महानता से जुड़े अनेक पक्ष हैं। लेकिन उनमें महत्त्वपूर्ण पक्ष है उनकी संत चेतना, आँखों में छलकती करुणा, सोच में अहिंसा, दर्शन में अनेकांतवाद, भाषा में कल्याणकारिता, हाथों में पुरुषार्थ और पैरों में लक्ष्य तक पहुँचने की गतिशीलता। आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महामानव विरल होते हैं। कहा जा सकता है कि आचार्य महाप्रज्ञ ऐसे सृजनधर्मा साहित्यकार, विचारक एवं दार्शनिक मनीषी थे जिन्होंने प्राचीन मूल्यों को नये परिधान में प्रस्तुत किया। उनका रचित साहित्य राष्ट्र, समाज एवं सम्पूर्ण मानवता को प्रभावित एवं प्रेरित करता रहा है। वे अध्यात्म-चेतना को परलोक से न जोड़कर वर्तमान जीवन से जोड़ने की बात कहते थे। उनका साहित्य केवल मुक्ति का पथ ही नहीं, वह शांति का मार्ग है, जीवन जीने की कला है, जागरण की दिशा है और रूपांतरण की सजीव प्रक्रिया है। उनका साहित्य जादू की छड़ी है, जो जन-जन में आशा का संचार करती रही है। मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनके निकट रहने, उनके कार्यक्रमों से जुड़ने और उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का अवसर मिला। मुझे उनका असीम आशीर्वाद प्राप्त हुआ और मुझे पहला आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरुस्कार भी उन्ही के सान्निध्य में मिला। मेरा जीवन सचमुच ऐसे महापुरुष की सन्निधि से धन्य बना। आचार्य महाप्रज्ञ के निर्माण की बुनियाद भाग्य भरोसे नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, पुरुषार्थी प्रयत्न और तेजस्वी संकल्प से बनी थी। हम समाज एवं राष्ट्र के सपनों को सच बनाने में सचेतन बनें, यही आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेरणा थी और इसी प्रेरणा को जीवन-ध्येय बनाना उस महामानव के जन्म दिवस को मनाने की सच्ची सार्थकता है।

भारत की अगली डिजिटल जनगणना (2027) से देश के भविष्य की तस्वीर सामने आएगी

अजय दीक्षित

आशा करनी चाहिए कि 2027 की जनगणना से देश की तस्वीर उभर कर सामने आए।आज केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने 16 साल बाद हो रही पहली डिजिटल जनगणना की अधिसूचना जारी की। इससे पहले 2011में जनगणना हुई थी। 28 राज्योंउत्तराखंड , हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, गोवा, ओड़िशा, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम, पंजाब ,असम, नागालैंड, त्रिपुरा, मणिपुर, बिहार, पश्चिमी बंगाल, कर्नाटक, केरल, तेलंगाना, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश,और आठ केंद्र शासित प्रदेशों दिल्ली, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, दमन द्वीप, नगर हवेली, चंडीगढ़,में 34 लाख कर्मचारी जनगणना करेंगे और यह विश्व का अब तक का सबसे बड़ा प्रशासनिक अभियान होगा ।इस जनगणना में एक लाख तीस हजार ऐसे लोग या कर्मचारी होंगे जो इसे डिजिटल प्रारूप में स्थापित करने का काम करेंगे। मार्च 2027 में इस जनगणना के परिणाम जारी किए जाएंगे। गृह मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक इस जनगणना में मकान,जमीन, पुरुष, स्त्री,अभय लिंगी, जाति, अनुसूचित जाति, जनजाति,जंगल, पेड़,स्कूल, माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, महाविद्यालय, अन्य शिक्षण संस्थान, मंदिर , मस्जिद, गुरुद्वारा, ब अन्य धार्मिक स्थानों, रीत रिवाजों शौचालय,नलकूप,नहरें,कुलाबे, कुएं, तलाब, झील, झरने, नदियां,नाले,सड़क, पगडंडी,पुल,अन्य बुनियादी ढांचे, मतदान केंद्र,सभी डिजिटल प्रारूप में स्थापित कर गिने जाएंगे। इसमें विधायक, सांसद, पंचायतों के पंच, सरपंच, नगरीय निकायों, पार्षदों, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री,मंत्री, राज्यपाल, राष्ट्रपति,की गिनती होगी।पहली बार सरकार ने इसे उद्देश्य पूर्ण बनाया है।

जनगणना हमेशा देश की दिशा और दशा तय करती है।

इस जनगणना से जो परिणाम निकलेंगे वह सरकार की योजना, प्रगति, सामाजिक संस्थाओं, बनियादी ढांचों को आवश्यकताओं को इंगित करेंगे। सरकार के समक्ष एक विकल्प होगा कि किस राज्य या प्रदेश में किस प्रकार की जरूरतें हैं।

सामाजिक संस्थाओं,में और समाज में किस राज्य में कौन कौन सी जातीय निवास करती हैं और वे कितने प्रतिशत में है। सरकार आगामी दिनों में इन आंकड़ों से आरक्षण, नौकरियों में, विश्व विद्यालयों, चिकित्सा सेवाओं,में कौन सी जातीय पीछे छूट गयी,इसको भी तय कर सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी क्षेत्रों का अकड़ा भी सामने आएगा ।

आगामी जनगणना स्थाई मतदाता सूची भी बनाएगी जिसमें व्यक्ती या नागरिक की 18 वर्ष पूरी होने पर स्वचालित मतदाता सूची में शामिल होगा।

यह प्रक्रिया गरीब, बीपीएल परिवार, खाद्यान्न उपलब्ध कराने का काम भी करेगा।

गृह मंत्रालय के सूत्रों ने बताया है कि जनगणना बहुआयामी और बहुद्देशीय होगी।इस जनगणना से बहुत से विवाद हल करने में सहायता मिल सकती है।

विश्व में प्रत्येक देश में डिजिटल जनगणना हुई है और यह स्थाई है,इसी आधार पर सरकार की योजनाओं को लागू किया जाता है।

जन जाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, धर्म, समुदाय,की गढ़ना होगी । जनगणना सांख्यिकी विशेषज्ञों का मत है कि भारत में अब तक हुए जनगणना से यह जनगणना व्यापक और बहुद्देशीय होगी। विशेषकर उन क्षेत्रों के लिए जो विकास में पीछे हैं।

एक प्रकार से शोषित पीड़ित समाज के लिए महत्वपूर्ण आयाम प्रदान करने वाली है। अभी सरकार 80 करोड़ लोगों को खाद्यान्न उपलब्ध कराती है। लेकिन स्टडी फॉर ह्यूमन राइट्स लन्दन में एक रिपोर्ट

गृह मंत्रालय भारत के हवाले प्रकाशित हुई है उसमें कहा गया है कि अभी भारत की जनसंख्या 140 बिलियन है और यह अनुमानित ही है क्योंकि 2011 के बाद के कोई सार्थक प्रमाण नहीं है। स्टडी फॉर ह्यूमन राइट्स लन्दन ने कहा है कि भारत की वास्तविक जनसंख्या अनुमानित से कम हो सकती है। क्योंकि 2011 में जनगणना कागज पर केवल लोगों के व्यक्तिव या कथन से हुई थी। लेकिन अब सॉफ्टवेयर दो बार किसी व्यक्ति की जानकारी आधार कार्ड के अनुसार ही स्वीकार करेगा। इस लिए जनसंख्या 1300 मिलियन भी हो सकती है। जनगणना में जीवन,मृत्यु भी दर्ज होगा ।इससे जीवन और मृत्यु दर का बोध भी होगा।

बताया जाता है कि 2050 में भारत की आबादी बढ़ना बंद हो जाएगी। क्योंकि प्रजनन दर 2.1 अभी है। अगर 1.9 तक गिरी तो मृत्यु दर बढ़ेगी और जन्म दर घटेगी ।समाज शास्त्री ओ के मुताबिक अभी 2030 के बाद वर्तमान मृत्यु दर में बढ़ोत्तरी होगी क्योंकि 60,70,80, के दशक की जन्म वाली पीढ़ी क्रमश 80,70,60 वर्षों के होगी। **यह निजी विचार है।**

समय ही बताएगा संन्यास ले लेंगे या फिर सर्वोच्चता बरकरार रखेंगे

डॉ. घनश्याम बादल

वैसे तो नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री के रूप में 26 मई 2025 को 11 साल पूरे कर लिए थे, लेकिन अपने तीसरे कार्यकाल की शपथ उन्होंने 9 जून 2024 को ली इसलिए उनके तीसरे कार्यकाल की सरकार की वर्षगांठ 9 जून 2025 को मनाई गई।

यदि कार्यकाल की दृष्टि से देखें तो नरेंद्र दामोदर दास मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री चुने जाने वाले दूसरे प्रधानमंत्री हैं। वहीं कार्यकाल की दृष्टि से वें तीसरे स्थान पर हैं और उनसे ऊपर केवल जवाहरलाल नेहरू एवं इंदिरा गांधी का कार्यकाल रहा है।

वर्तमान परिस्थितियों के हिसाब से मोदी अपना तीसरा कार्यकाल भी सफलतापूर्वक पूरा करते दिखाई देते हैं तब वह कार्यकाल की दृष्टि से अपने इसी कार्यकाल में दूसरे स्थान पर आ जाएंगे। यदि मोदी का एक प्रधानमंत्री की दृष्टि से एक विवेचन किया जाए तो प्रधानमंत्री एवं सरकार के मुखिया के रूप में उनकी खूबियां और खामियां दोनों ही सामने आती हैं। 26 मई 2014 को पहली बार सांसद चुने जाने के बाद ही वे प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए जैसे पहली बार विधायक चुने जाने के बाद गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे।

अपने विशिष्ट अंदाज में उन्होंने संसद भवन की ड्योढ़ी पर माथा टेककर संसद में प्रवेश किया तो भावुक देश को बहुत आशाएं जगी थी। अपने पहले भाषण में भी मोदी ने देश को चुनाव में 'अच्छे दिनों' के वादे को पूरा करने का विश्वास दिलाया। साथ ही 'सबका साथ सबका विकास' का नारा देकर सारी राजनीतिक का कटुता भुलाकर देश के सर्वांगीण विकास की बात की और खुद को प्रधानमंत्री के बजाय 'प्रधान सेवक' की संज्ञा दी तथा कहा कि वह एक शासक नहीं बल्कि 'चौकीदार' के रूप में देश के हितों की रक्षा करेंगे।

मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में निराश ही नहीं किया और एक से बढ़कर एक अभिनव योजनाएं देश के सामने रखीं, जिनमें जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, अटल पेंशन योजना, महिला कल्याण व स्वच्छ भारत मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से उन्होंने आम आदमी का दिल जीत लिया। अपने इस कार्यकाल में उन्होंने नोटबंदी तथा पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक करने जैसे कड़े निर्णय देकर दिखाया कि अपने संकल्प के पक्के हैं। उनकी राजनीतिक चतुराई के आगे विपक्षी पूरे कार्यकाल में एक संभ्रम की स्थिति में रहे और राहुल गांधी को तो उन्होंने इस तरह निशाने पर रखा कि वे कभी भी खुद को उनके प्रतिद्वंद्वी साबित नहीं कर पाए।

मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में निराश ही नहीं किया और एक से बढ़कर एक अभिनव योजनाएं देश के सामने रखीं, जिनमें जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, अटल पेंशन योजना, महिला कल्याण व स्वच्छ भारत मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से उन्होंने आम आदमी का दिल जीत लिया। अपने इस कार्यकाल में उन्होंने नोटबंदी तथा पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक करने जैसे कड़े निर्णय देकर दिखाया कि अपने संकल्प के पक्के हैं। उनकी राजनीतिक चतुराई के आगे विपक्षी पूरे कार्यकाल में एक संभ्रम की स्थिति में रहे और राहुल गांधी को तो उन्होंने इस तरह निशाने पर रखा कि वे कभी भी खुद को उनके प्रतिद्वंद्वी साबित नहीं कर पाए। और बचकाने शब्दों 'चौकीदार ही चोर है' या 'खून का सौदागर' कहकर राहुल और उनकी मां सोनिया दोनों फंसे रहे। ऐसा नहीं कि मोदी का यह कार्यकाल एकदम सफल ही रहा उसमें विपक्ष को आलोचना का भी पूरा मौका मिला। उनके 'अच्छे दिन' और 15 लाख रुपये हर भारतीय के खाते में आने की खूब मजाक बनी जिसे बाद में अमित शाह ने एक 'चुनावी जुमला' करार देकर जान छुड़ाई। उनका नोटबंदी से कालाधन व आतंकवाद नियंत्रण का पासा भी उल्टा पड़ा।

यह निजी विचार है।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने संस्थान द्वारा विकसित 'ट्रैक्टर चालित प्लास्टिक मल्च लेयर-कम-प्लांटर' का अवलोकन भी किया

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आईसीएआर-केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल की समीक्षा की

पीआईबी

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज आईसीएआर-केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (सीआईएई), भोपाल का दौरा किया।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने वैज्ञानिकों, छात्रों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कृषि के विकास में संस्थान के योगदान की सराहना की और किसान-हितैषी प्रौद्योगिकियों के तीव्र विकास तथा विकसित प्रौद्योगिकियों को किसानों, विशेषकर छोटे किसानों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने संस्थान द्वारा हाल के दिनों में किए गए कार्यों की समीक्षा की और संस्थान के एआईसीआरपी के नेटवर्क के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पहचान करने तथा अगले दस वर्षों में मशीनीकरण संबंधी क्रियाकलाप की योजना बनाने की जरूरत पर बल दिया, ताकि देश विकसित भारत अभियान की दिशा में एक तेजी से आगे बढ़ सके। उन्होंने छोटे इंजन द्वारा संचालित या वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों से संचालित मशीनरी विकसित करने तथा सेंसर आधारित प्रणालियों के अलावा अन्य प्रणालियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि सभी वर्गों के किसानों

का समावेशी विकास हो सके। उन्होंने देश के विभिन्न स्थानों पर किसान मेले आयोजित करने तथा सभी हितधारकों के साथ विचार-विमर्श सत्र आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की, ताकि निकट भविष्य में देश में मशीनीकरण की रूपरेखा तैयार की जा सके। इसके अलावा उन्होंने खाद्य सुरक्षा, मृदा स्वास्थ्य तथा प्रयोगशाला से भूमि तक प्रौद्योगिकियों के प्रभावी हस्तांतरण के महत्व पर जोर दिया।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने संस्थान द्वारा हाल ही में विकसित प्रौद्योगिकियों तथा उत्पादों को भी देखा तथा उनकी सराहना की। कार्यक्रम में सचिव (कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग) एवं आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट, उप महानिदेशक (इंजीनियरिंग) डॉ. एस.एन. झा, उप महानिदेशक (विस्तार) डॉ. ए.के. नायक, आईसीएआर-सीआईएई के निदेशक डॉ. सी.आर. मेहता तथा आईसीएआर-आईआईएसएस, भोपाल के निदेशक डॉ. एम. मोहंती उपस्थित थे।

आईसीएआर-सीआईएई द्वारा विकसित ट्रैक्टर चालित प्लास्टिक मल्च लेयर-कम-प्लांटर ऊँचे क्यारियों का निर्माण, ड्रिप लेटरल और प्लास्टिक मल्च बिछाना तथा मल्च के नीचे बीज बोने का कार्य मैन्युअल रूप से करना कठिन, समयसाध्य और श्रमसाध्य होता है, जिसमें लगभग 29 मानव-दिन/हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। इन सभी कार्यों को एक साथ करने के लिए ट्रैक्टर चालित प्लास्टिक मल्च लेयर-कम-प्लांटर विकसित किया गया है।

इस यंत्र में ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक प्रणाली का उपयोग करके हाइड्रोलिक मोटर (385 न्यूटन मीटर) तथा चेन-स्प्रोकेट ट्रांसमिशन सिस्टम के माध्यम से एक्सेंट्रिक स्लाइडर क्रैंक मैकेनिज्म संचालित किया जाता है, वहीं बीज मापने की इकाई में वैक्यूम ट्रैक्टर के पीटीओ से चलने वाले एस्पिरेटर ब्लोअर द्वारा तैयार किया जाता है।

एक्सेंट्रिक स्लाइडर क्रैंक मैकेनिज्म ड्राइविंग डिस्क की घूमने वाली गति को कनेक्टिंग रॉड के माध्यम से स्लाइडर क्रैंक में ऊर्ध्वाधर गति में बदल देता है और पंच प्लांटिंग मैकेनिज्म के ÷ष्ठ÷ प्रोफाइल को मिट्टी में खोलता है।

प्न्यूमैटिक बीज मापने वाली प्लेट और एक्सेंट्रिक स्लाइडर क्रैंक मैकेनिज्म को इस प्रकार समकालिक किया गया है कि मापने वाली प्लेट द्वारा उठाया गया बीज बंद ÷प्लांटिंग जॉ÷ में डाला जाता है, जो बीज को पकड़े रखता है और स्लाइडर क्रैंक के माध्यम से प्लास्टिक मल्च में प्रवेश करने के बाद उसे छोड़ता है।

यंत्र की प्रभावी कार्य क्षमता 0.2 हेक्टेयर/घंटा और कार्य कुशलता 74त्न है, जो 1.7 किमी/घंटा की गति और 1 मीटर कार्य चौड़ाई पर आधारित है।

यंत्र की कुल लागत ?3,00,000/- और संचालन लागत 1500/घंटा है। इसका पेबैक पीरियड 1.9 वर्ष (444 घंटे) और ब्रेक-ईवन पॉइंट 70 घंटे/वर्ष है।

यंत्र में कतार से कतार की दूरी 0.5 से 0.9 मीटर और पौधे से पौधे की दूरी 0.2 से 0.6 मीटर को यांत्रिक रूप से समायोजित करने की सुविधा है।

यह यंत्र मौजूदा ड्रिप लेटरल-कम-प्लास्टिक मल्च लेयर मशीन की तुलना में 26 मानव-दिन/हेक्टेयर (89त्न) और 6600/हेक्टेयर (43त्न) की लागत की बचत करता है। यह यंत्र प्लास्टिक मल्च में उच्च मूल्य वाली फसलें जैसे खरबूजा, ककड़ी, स्वीट कॉर्न, बेबी कॉर्न, हरी मटर, भिंडी, फलियाँ आदि लगाने के लिए उपयुक्त है।

नई दिल्ली में महाराजा अग्रसेन भवन, अशोक विहार में योग दिवस समारोह में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता.

केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी ने हैदराबाद के रामगोपालपेट स्थित जैन भवन में मेरिट स्कॉलरशिप और नोटबुक वितरण समारोह के दौरान अकादमिक उत्कृष्टता के लिए एक छात्र को टॉपर पुरस्कार प्रदान किया।

रक्षा राज्य मंत्री केन्या और मेडागास्कर का दौरा करेंगे

पीआईबी। रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ के नेतृत्व में एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल 23 से 26 जून, 2025 तक केन्या और मेडागास्कर की यात्रा पर रहेगा। रक्षा राज्य मंत्री इस दौरे के पहले चरण में 23 जून को ताइता-तवेटा काउंटी में स्मारक स्तंभ (भारत और केन्या के शहीद सैनिकों के सम्मान में समर स्मारक) के संयुक्त अनावरण के लिए केन्या की यात्रा करेंगे। श्री संजय सेठ दूसरे चरण में 26 जून को एंटानानारिवो में मेडागास्कर की स्वतंत्रता की 65वीं वर्षगांठ और मालागासी सशस्त्र बलों के गठन के समारोह में भाग लेने के लिए मेडागास्कर का दौरा करेंगे। भारत और केन्या समुद्री पड़ोसी राष्ट्र हैं। दोनों देशों के बीच समकालीन संबंधों की विशेषता उच्च स्तरीय आदान-प्रदान, मजबूत व्यापार एवं निवेश, केन्या से चिकित्सा मूल्य यात्रा और व्यापक जन-जन संपर्क हैं। दोनों देशों के बीच उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष की एक साझा विरासत रही है। कई भारतीयों ने केन्या के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और उसका सहयोग किया।

''11 वर्षों में किसी भी मंत्री पर भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं : प्रधानमंत्री मोदी के पारदर्शी शासन का प्रमाण''

पीआईबी

दूरदर्शन समाचार को दिए एक विशेष साक्षात्कार में केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन?द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों में युवा आकांक्षाओं के लोकतंत्रीकरण के साथ सिविल सेवाओं का लोकतंत्रीकरण हुआ है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि एक समय में आईएएस और सिविल सेवा केवल बिहार, तमिलनाडु, केरल आदि जैसे कुछ राज्यों तक ही सीमित थी, लेकिन आज हमें उन राज्यों से टॉपर मिल रहे हैं, जो पहले पंजाब, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के टॉपर्स की सूची में शायद पहले कभी शामिल नहीं होते थे। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती जिले पुंछ की युवा लड़की परसनजीत कौर का उदाहरण दिया, जिसने पहले ही प्रयास में 2022 की सिविल सेवा परीक्षा में अखिल भारतीय रैंक 11 हासिल की या पंजाब के लड़के अनमोल शेर सिंह बेदी का उदाहरण दिया, जिसने 2016 की सिविल सेवा परीक्षा में अखिल भारतीय रैंक 2 हासिल की थी।

मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा कि इससे व्यवस्था द्वारा प्रदत्त निष्पक्षता और समान अवसर में विश्वास बहाल हुआ है, तथा इससे

युवाओं की आकांक्षाओं का लोकतंत्रीकरण भी हुआ है।

डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा, ''यह लोकतंत्र का सच्चा सार है - जहां हर मां को, चाहे उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ भी हो, यह विश्वास होता है कि उसका बच्चा शीर्ष पर पहुंच सकता डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि पिछले 11 साल भारत के लिए परिवर्तनकारी रहे हैं। उन्होंने कहा, ''जिस चीज के लिए कई पीढ़ियां दशकों से तरस रही थीं, वह महज एक दशक में संभव हो गई है।'' उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने अतीत के आंसू पोंछे हैं और उनकी जगह उम्मीद और भविष्य की आकांक्षाओं से आंखें भर गई हैं। मंत्री महोदय ने कहा कि प्रत्येक बीतता वर्ष एक नया मील का पत्थर साबित हो रहा है - चाहे वह बुनियादी ढांचे, शासन, प्रौद्योगिकी या युवा सशक्तिकरण के क्षेत्र में हो - जिससे प्रत्येक भारतीय के लिए अभूतपूर्व अवसर पैदा हो रहे हैं।

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा प्रधानमंत्री कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नागरिकों का आत्म-सम्मान बहाल हुआ है। प्रधानमंत्री के 2016 के ऐतिहासिक ''स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया'' आह्वान का जिक्र करते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इसने पारंपरिक सरकारी नौकरियों से परे रोजगार के क्षितिज को कैसे व्यापक बनाया है।

मंत्री ने कहा, ''तभी लोगों को एहसास हुआ कि नौकरी का मतलब केवल ''सरकारी नौकरी'' नहीं है, बल्कि नवाचार, उद्यम और स्टार्टअप भी है।''

जीआरपी प्रमुखों के छठे अखिल भारतीय सम्मेलन में रेलवे में अपराध नियंत्रण के लिए एकीकृत राष्ट्रीय रणनीति की पुष्टि की

रेल मदद के माध्यम से खुफिया जानकारी साझा करने, समन्वित संचालन और एफआईआर एकीकरण से यात्री सुरक्षा बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया

पीआईबी

रेलवे सुरक्षा बल के तत्वावधान में आयोजित सरकारी रेलवे पुलिस प्रमुखों का छठा अखिल भारतीय सम्मेलन आज विज्ञान भवन, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। आरपीएफ के महानिदेशक श्री मनोज यादव की अध्यक्षता में आयोजित उच्च स्तरीय सम्मेलन में रेल मंत्रालय के प्रतिनिधियों के साथ-साथ विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के डीजीपी, एडीजीपी और जीआरपी के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

इस सम्मेलन द्वारा भारतीय रेलवे पर अपराध नियंत्रण की बढ़ती चुनौतियों से निपटने और लाखों रेल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक तंत्र को मजबूत करने के लिए एक ठोस प्रयास की पहल की गई।

सम्मेलन का मुख्य विषय खुफिया जानकारी साझा करने को बढ़ाना, संयुक्त परिचालन रणनीति तैयार करना और आपराधिक तत्वों की बदलती कार्यप्रणाली का मुकाबला करने के लिए अंतर-एजेंसी समन्वय को बेहतर बनाना था। सम्मेलन में यात्रियों को चोरों और धोखेबाजों के आम हथकंडों और जाल के बारे में शिक्षित करने के लिए यात्री जागरूकता अभियान को तेज करने पर चर्चा हुई। सम्मेलन में रेल मदद पोर्टल पर दर्ज यात्री संपत्ति चोरी की शिकायतों को औपचारिक एफआईआर में बदलने के लिए जोर दिया गया, जिससे अपराधियों का पता लगाने की दर में वृद्धि होगी और बार-बार अपराध करने से रोका जा सकेगा।

यात्रियों के कीमती सामान चुराने वाले संगठित अंतरराज्यीय आपराधिक नेटवर्क को खत्म करने के लिए, सक्रिय निगरानी, ??राज्यों में समन्वित संचालन और चेहरे की पहचान प्रणाली सहित प्रौद्योगिकी के उत्तम तरीकों का लाभ उठाने पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की जीआरपी इकाइयों के बीच एकीकृत प्रतिक्रिया प्रणाली की आवश्यकता पर जोर दिया गया ताकि क्षेत्राधिकार संबंधी अंतराल को रोका जा सके जिसका फायदा अक्सर अपराधी उठाते हैं।

सम्मेलन में महिला यात्रियों पर बढ़ते अपराधों पर विशेष ध्यान दिया गया तथा प्रतिभागियों ने विशेष गश्त, स्टेशनों और कोचों में सीसीटीवी कैमरे तथा महिला यात्रियों में सुरक्षा की भावना बढ़ाने के लिए मेरी सहेली टीमों की तैनाती सहित कई उपायों पर सहमति व्यक्त की।

ड्रग तस्करों और तस्करों द्वारा रेलवे परिसरों के दुरुपयोग पर भी चर्चा की गई, जिसमें गहन जांच और तत्काल खुफिया सूचनाओं के माध्यम से ऐसी अवैध गतिविधियों को रोकने के लिए रणनीतियों पर चर्चा की गई। खुफिया ब्यूरो द्वारा एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति में संवेदनशील रेलवे प्रतिष्ठानों के लिए संभावित आतंकवादी खतरों और भेद्यता आकलन और मजबूत सुरक्षा प्रोटोकॉल की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त, रेलवे परिसरों में बाल सुरक्षा के मुद्दे पर भी विचार-विमर्श किया गया, जिसमें तस्करी और शोषण से बचाए जा रहे कमजोर बच्चों की समय पर पहचान और पुनर्वास के लिए तंत्र पर ध्यान केंद्रित किया गया।

केंद्रीय खेल राज्य मंत्री श्रीमती रक्षा खडसे ने नागरिकों से फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल में भाग लेकर स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने का आग्रह किया

पीआईबी

आध्यात्मिक निष्ठा, शारीरिक तंदुरुस्ती और पर्यावरण के प्रति चेतना के अद्भुत संगम में, चौथा अखिल महाराष्ट्र पंढरपुर साइकिल वारी सम्मेलन-2025 बड़े उत्साह और एकता के साथ मनाया गया। फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल का यह मेगा इवेंट भारतीय खेल प्राधिकरण, क्षेत्रीय केंद्र - मुंबई और पंढरपुर साइकिल वारी संघ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्य प्रदेश के 90 से अधिक साइक्लिंग क्लबों का प्रतिनिधित्व करने वाले 5000 से अधिक साइकिल चलाने वालों ने भाग लिया। इन साइकिल चलाने वालों ने महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के पवित्र शहर पंढरपुर तक पहुंचने के लिए 3-4 दिन पहले से ही 400 से 450 किलोमीटर की यात्रा शुरू कर दी थी। उन्होंने आध्यात्मिक रूप से उल्लेखनीय नगर प्रदक्षिणा और ऊर्जावान रिंगन सोहला में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिसमें अनुकरणीय दृढ़ संकल्प, भक्ति और धैर्य का प्रदर्शन किया गया।

इस कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल राज्य मंत्री श्रीमती रक्षा खडसे, महाराष्ट्र सरकार में ग्रामीण विकास और पंचायती राज विभाग मंत्री श्री जे बी गोरे जैसे कई गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर अन्य लोगों में सांसद श्री धैर्यशील मोहिते पाटिल, विधान परिषद के सदस्य श्री प्रशांत परिचारक, विधान परिषद के सदस्य श्री रणजीतसिंह मोहिते पाटिल, भारतीय खेल प्राधिकरण के क्षेत्रीय केंद्र मुंबई के क्षेत्रीय निदेशक श्री पांडुरंग चाटे (आईआरएस) और प्रसिद्ध एंड्योरेंस साइक्लिस्ट और 19 बार के आयरनमैन डॉ. अमित सामर्थ शामिल थे।

लोकशक्ति
www.lokshakti.in

शतरंज एक बौद्धिक खेल जो खिलाड़ियों में एकाग्रता, धैर्य और रणनीतिक सोच का विकास करता – विधायक ब्यास नारायण कश्यप

शतरंज प्रतियोगिता का हुआ समापन

जांजगीर-चांपा /

जिला शतरंज संघ द्वारा आयोजित जिला स्तरीय शतरंज चयन प्रतियोगिता 2025 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह रविवार शाम होटल हरियाली हेरिटेज, जांजगीर में भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जांजगीर चांपा विधायक श्री ब्यास नारायण कश्यप (विधायक, जांजगीर-चांपा) उपस्थित रहे। उनके साथ पूर्व जिला पंचायत सदस्य श्रीमती शशि राठौर, समाजसेवी खगेश साहू एवं वरिष्ठ समाजसेवी रामखिलावन राठौर विशिष्ट अतिथिगण भी मंचासीन रहे।

मुख्य अतिथि श्री ब्यास कश्यप ने कहा कि शतरंज एक बौद्धिक खेल है, जो खिलाड़ियों में एकाग्रता, धैर्य और रणनीतिक सोच का विकास करता है। यह खेल आज के युग में विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने अंडर-15, 17, 19 एवं ओपन कैटेगरी के बॉयज़ एवं गर्ल्स वर्ग से राज्य स्तर के लिए चयनित 4+4 खिलाड़ियों को ट्रॉफी एवं मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही प्रतियोगिता में

भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को मेडल देकर सम्मानित किया गया। पूर्व जिला पंचायत सदस्य श्रीमती शशि राठौर, समाजसेवी खगेश साहू एवं वरिष्ठ समाजसेवी रामखिलावन ने भी संबोधित किया।

समापन समारोह में खिलाड़ियों के साथ-साथ उनके अभिभावकों की भी सक्रिय उपस्थिति रही। सभी ने आयोजन की सराहना की और कहा कि ऐसे आयोजन से जिले के खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का सशक्त मंच मिलता है। जिला शतरंज संघ के अध्यक्ष श्री देवेंद्र कुमार राठौर, उपाध्यक्ष श्री देवेंद्र यादव सहित आयोजन समिति के सभी सदस्यों ने पूरे आयोजन को सफलतापूर्वक संपन्न कराया। जिला शतरंज संघ द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में अंदर 15 में बालक वर्ग में ङ्क शीर्ष 4 चयनित खिलाड़ी प्रखर पटेल, अंश साव, वेदांश यादव, प्रथम राठौर

अंडर-15 बालिका वर्ग ङ्क शीर्ष 4 चयनित खिलाड़ी, रिमझिम केवर्त, दुर्गा साहू,अन्वेषा राठौर, पिहू चंदानी, अंडर-17 बालक वर्ग ङ्कविवेक कुमार सोनी, द्वितीय प्रखर पटेल, लोकेश साहू,प्रथम राठौर अंडर-17 बालिका वर्ग में रिमझिम केवट, अनुषा खांडे, वानी कमलेश इसी प्रकार अंदर-19 में लोकेश साहू का वॉइस कैटेगरी में चयन हुआ है। वहीं सीनियर कैटेगरी में वूमेंस वर्ग में दुर्गा साहू, संतोषी कुमारी और पुरुष वर्ग में रविंद्र नाथ,सत्येंद्र देव बर्मन, संतोष केवट, मनोज कुमार ठाकुर चयन राज्य स्तरीय टूर्नामेंट में हुआ है। इस दौरान अंदर-19 में विशेष उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर विधान एवं अंदर 13 में गर्वित देवांगन एवं अनुषा खांडे को सम्मानित किया गया है। इन सभी प्रतिभागियों को जिला शतरंज में बहुत-बहुत बधाई दी है। जिला शतरंज संघ अध्यक्ष श्री देवेंद्र राठौर, उपाध्यक्ष श्री देवेंद्र यादव, श्री गिरधर गोपाल कश्यप सचिव कोषाध्यक्ष श्री लोकेश कुमार यादव, सदस्य श्री संतराम यादव, श्रीमती जयंती यादव, श्री शशांक राठौर, मुकेश सोनकर, मनोज ठाकुर सहित सीनियर आर्बिटर श्री आलोक क्षत्रिय, ओम वर्मा सहित पदाधिकारी इस कार्यक्रम में मौजूद रहे।

भारतीय जनता पार्टी मनायेगी आज डाक्टर श्यामप्रसाद मुखर्जी का बलिदान दिवस

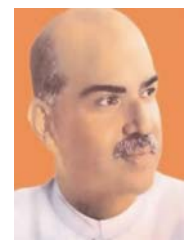

जांजगीर चांपा / आज दिनांक 23 जून 2025 को जनसंघ के संस्थापक व भाजपा के प्रेरणास्रोत परम् सम्मानीय श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की पुण्यतिथि बलिदान दिवस है ।भाजपा जिलाध्यक्ष अम्बेश जांगड़े ने सभी मण्डल अध्यक्षो को निर्देश देते हुए कहा है कि बलिदान दिवस सभी मण्डल मुख्यालयो सहित समस्त बूथों में मनाना सुनिश्चित करें ।

कोरी डेम में लूटपाट करने वाले फरार आरोपी गिरफ्तार

बिलासपुर, कोटा पुलिस ने जिले के पर्यटन स्थल कोरी डेम में लूटपाट करने वाले दो फ्रार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मामले में आरोपियों के खिलाफ धारा 296,351(2), 115(2),309(4),3(5) बी.एन.एस. के तहत अपराध दर्ज किया गया है। बिलासपुर जिले में ऑपरेशन प्रहार के तहत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रजनेश सिंह (भा.पु.से.) द्वारा गुंडे बदमाशों और फ्रार आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया है । थाना कोटा में दिनांक 04.04.2025 को प्रार्थी थाना आकर रिपोर्ट दर्ज कराया था की पर्यटन स्थल कोरी डेम कोटा में घूमने जाने के दौरान तीन आरोपियों के द्वारा उससे 2 नग मोबाइल एवं 1500 रुपए नकदी रकम को लुट लिए है। जिस पर थाना कोटा में लूट का अपराध पंजीबद्ध कर श्रीमती अर्चना झा (रा. पु.से.) अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण एवं श्रीमती नूपुर उपाध्याय (रा.पु.से.) अनुविभागीय अधिकारी पुलिस कोटा के मार्गदर्शन में रिपोर्ट कायमी के उपरांत त्वरित कार्यवाही कर पूर्व में आरोपी मनीष कुमार जांगड़े को गिरफ्तार किया गया था तथा शेष 02 अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु विभिन्न जगहों पर छापामारी कार्यवाही किया जा रहा था। घटना समय से फ्रार आरोपियों भरत यादव पिता झुमुक लाल यादव उम्र 24 वर्ष निवासी कुंवारीमुड़ा तथा श्याम लाल ध्रुव पिता हीरा लाल उम्र 27 वर्ष निवासी बोईर खोली थाना कोटा को दिनांक 20.06.2025 को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

धाराशिव में हुआ गत रात्रि दो पक्षों में जमकर मारपीट घटना की जानकारी मिलने पर पहुंचे पुलिस अधीक्षक

जांजगीर चांपा / जांजगीर चाम्पा - जांजगीर के समीपस्थ ग्राम धाराशिव में देर रात बड़ी घटना घटित हुई है जिसमे दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट की जानकारी हुई है। इस खूनी संघर्ष में तलवार और धारदार हथियारों का इस्तेमाल किया गया। जिसमें एक युवक की गर्दन कट गई है, जिसे गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया है। दूसरी तरफ घटना के बाद गांव में तनाव का माहौल बन गया है। मामले से जुड़ी जानकारी अनुसार बीते शाम करीब साढ़े सात बजे अभिषेक गोस्वामी एवं जितेश राठौर के बीच बाद विवाद व गाली गलौच हुआ जिसके बाद यह मामला रात्रि में दो पक्षों की मारपीट में तब्दील हो गया जिसमें अभिषेक गोस्वामी के गर्दन में गंभीर चोंट आया है वहीं रात में ही पुलिस अधीक्षक विजय कुमार पाण्डेय को घटना की जानकारी मिलने पर मौके में पहुंचकर पामगढ़ थाना को निर्देशित

कर प्रकरण में दोनों पक्षों के 6 ब्यक्ति की गिरफ्तारी कार्यवाही होने की जानकारी मिला है । दोनों ओर से हथियार निकाल गए और तलवारबाजी तक हो गई। इस मारपीट में दोनों पक्षों से एक-एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया है। घायलों को तत्काल उपचार के लिए सिम्स और अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है । फ्लिहाल गांव में अतिरिक्त बल तैनात कर गांव को छावनी में तब्दील कर दिया गया है ताकि कोई भी अप्रिय घटना न हो। पुलिस दोनों पक्षों से घटना के विषय में पूछताछ कर रही है और मामले की तफ्तीश जारी है।

कथा में शिवरीनारायण के महाराज जी एक दिन अवश्य आते हैं –प्रदीप मिश्रा

महंत जी ने पारिजात का दुर्लभ पुष्प व्यास पीठ पर किया अर्पित

जांजगीर-चांपा

छत्तीसगढ़ राज्य गौ सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष महामंडलेश्वर राजेश्री महन्त रामसुन्दर दास जी महाराज जिला दुर्ग के ग्राम निकुम में आयोजित श्री शिव महापुराण कथा में सम्मिलित हुए। व्यास पीठ पर विराजित अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचक आचार्य प्रदीप मिश्रा जी महाराज ने लोगों को शिव महापुराण की कथा सुनते हुए कहा कि- *हमारे बीच में शिवरीनारायण के महाराज जी का पदार्पण हुआ है। छत्तीसगढ़ राज्य के किसी भी स्थान पर जब हमारी श्री शिव महापुराण की कथा होती है उसमें महाराज जी एक न एक दिन आवश्यक पधारते हैं।*

उन्होंने राजेश्री महन्त जी महाराज को मंच पर आमंत्रित किया *महाराज जी ने शाल, श्रीफ्ल के साथ आचार्य जी को पारिजात पुष्प भेंट किया जिसे उन्होंने श्री शिव महापुराण के व्यास पीठ पर चढ़ाया। उल्लेखनीय है कि लोकमान्यता के अनुसार पारिजात के वृक्ष को स्वर्ग से लाया हुआ वृक्ष माना जाता है उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में पारिजात धाम है यहां पांडवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय व्यतीत किया था। माता कुंती ने यहां कुंन्तेश्वर महादेव की स्थापना की उन्होंने भगवान शिव की पूजा के लिए पारिजात पुष्प की कामना की तब अर्जुन ने स्वर्ग से यह वृक्ष लाकर उन्हें प्रदान किया। यह दुर्लभ वृक्ष श्री दूधाधारी मठ में भी स्थित है। राजेश्री महन्त जी महाराज के साथ श्री शिव महापुराण की कथा का रसपान करने के लिए सुरेश शर्मा, निर्मल दास वैष्णव, हर्ष दुबे विशेष रूप से उपस्थित हुए।

देर से ही सही बारिश में राहत की बारिश : डोंगाकोहरौद सड़क में मरम्मत का कार्य

लोकशक्ति

जांजगीर चांपा/ जिले की बहुचर्चित डोंगाकोहरौद सड़क की खस्ताहाल स्थिती को देर से ही सही प्रशासन द्वारा लेबलिंग कर मरम्मत का कार्य किया जा रहा है जिससे मार्ग में आवागमन करने वाले राहगीरों की लिए राहत की बारिश साबित हो सकता है ।

यहां यह बताना लाजमी होगा कि पामगढ़ से रायपुर को जोड़ने वाली सड़क में डोंगाकोहरौद की चार किलोमीटर सड़क को पिछले 9 वर्ष से अधूरा छोड़ दिया गया है जिसके लिए कारण कोई भी हो लेकिन मानवता की दृष्टि से देखा जाय तो यह सिर्फ डोंगाकोहरौद वासियों की मानवता से खिलवाड़ है , अपितु मार्ग में प्रतिदिन आवागमन करने वाले भिलौनी , कोसिर , धनगांव , सहित ससहा तक के मार्ग की सभी ग्रामवासियों के साथ खिलवाड़ है। दूसरी तरफ इस रोड से रायपुर आगमन सुगम एवं सस्ता होने के कारण पूरे जिले सहित अन्य जिलेवासियों के लिए आवागमन का मार्ग है , उनको भी खस्ताहाल सड़क के कारण न्याय नही मिल पा रहा है । इस स्थिति की तह पर जाए तो 2016- 2017 की वर्ष में राज्य सरकार की राज्य सड़क विभाग द्वारा पामगढ़ से ससहा की प्रधानमंत्री सड़क को अपने अधीन लेकर चौड़ीकरण के साथ नवनिर्माण की बजट स्वीकृत किया गया और प्रशासनिक अमले द्वारा गांव गांव में बैठक लेकर चौड़ीकरण के लिए मुआवजा

डोंगाकोहरौद सड़क किसके क्षेत्र में ?
बड़ी विडंबना की बात है कि आए दिन जिला प्रशासन व राज्य सरकार द्वारा सड़क के विषय में बड़ी बड़ी बातें कही जाती है किंतु डोंगाकोहरौद की सड़क के बारे में गौर किया जाए तो ये बाते महज खोखली व हास्यपद लगता है जो पिछले 9 वर्षों से सड़क कम गड्ढे ही गड्ढे नजर आ रहा है , वहीं लोकनिर्माण के अधिकारी का जवाब और भी हास्यास्पद लगता है जो ये बोलते हैं कि गांव वाले गड्ढे को भरने नही देते जबकि उसी गांव में किसानों की जमीन पर किसानों की सहमति के बगैर डंडे के बल पर बड़े बड़े टावर खड़ा हो जाता

देने का सपना गांव वालों को दिखाया गया। इसी तरह की वाक्या डोंगाकोहरौद में भी हुआ जहां गांव के गरगज चौक में स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों के साथ सड़क निर्माण विभाग के अधिकारियों ने चौडीकरण के लिए मुआवजा देने की बात ग्रामवासियों से कहा और मुआवजा के लिए प्रक्रिया प्रारंभ किए जिसमें करीब 78 किसानों के लिए करीब 17 करोड़ का मुआवजा भी जिला भू अर्जन से पारित भी हो गया उसके बाद न तो आज तक पारित मुआवजा किसानों को मिला न ही सड़क बना , उधर ससहा की एक जगह को छोड़कर पूरे भिलौनी तक का सड़क बन गया । दूसरी तरफयह भी संज्ञान में आया कि उसी सड़क निर्माण विभाग द्वारा टुकड़े टुकड़े में ससहा से बलौदाबाजार सड़क को जोड़ने वाला सड़क और खोखरा से पामगढ़ तक का भी सड़क बनाया गया

जिसमें चौडीकरण में प्रभावित किसानों की भूमि का मुआवजा दिया गया है । बहरहाल डोंगाकोहरौद के साथ ही ऐसा अन्याय क्यों हुआ जिसमें भारतीय जनता पार्टी की दो दो सरकार की दो दो वर्ष के साथ कांग्रेस पार्टी की पांच साल की सरकार में ग्रामवासियों की मांग लगातार सरकार तक पहुंचते आ रहा है उसके बाद अभी तक सड़क बनाने के लिए कोई ठोस निर्णय अभी तक सामने नही आ सका है उसके बाद भी गांव वाले धैर्य के साथ सड़क बनने व मुआवजा मिलने की आस लगाए बैठे हैं ।

जिला पंचायत सभापति जागृति चुन्नी यदु ने नवप्रवेशी छात्रों को गणवेश, किताबें, लेखन सामग्री वितरित किया

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ शासन के आदेशानुसार प्रदेश सहित राज्य के विभिन्न स्कूलों में शाला प्रवेशोत्सव का शानदार आयोजन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत गोंड़री के शा प्राथमिक शाला में भी शाला प्रवेशोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत सभापति श्रीमती जागृति चुन्नी यदु जी उपस्थित रही। साथ ही संकुल समन्वयक लच्छूराम साहू, प्राधान पाठक श्रीमती नेहा साहू, सहायक शिक्षक श्री नकुल कमरिया, खिलेन्द्र हिरवानी, शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष राजूलाल साहू, सदस्यगण अनिल साहू, कामता ठाकुर, चंद्रभान यदु, सभी पंचगण एवं समस्त ग्रामवासी की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के शैल चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन से हुआ। इस दौरान शाला प्रवेशोत्सव के इस एतिहासिक पल में श्रीमती जागृति चुन्नी यदु ने नवप्रवेशी छात्रों को शाला गणवेश, किताबें एवं लेखन सामग्री वितरित किया।

बटमूल कॉलेज में सामूहिक योगाभ्यास सम्पन्न

जांजगीर चांपा /

एन एस एस एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर महापल्ली के संयुक्त तत्वावधान में पंचदिवसीय योग-शिविर का हुआ आयोजन

एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योगङ्क पर आधारित योगाभ्यास

लोईंग भाजपा मंडल एवं ग्राम पंचायत महापल्ली की रही सहभागिता

महापल्ली:- छत्तीसगढ़ शासन समाज कल्याण विभाग एवं क्षेत्रीय निदेशालय राष्ट्रीय सेवा योजना भोपाल एवं संचालनालय आयुष, रायपुर के निर्देशानुसार तथा जिला आयुष अधिकारी डॉ सी एस गौराहा के मार्गदर्शन में आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) महापल्ली एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई बटमूल कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में पंचदिवसीय योग प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन शिविर का आयोजन दिनांक 17-06-2025 से 21-06-2025 तक बटमूल कॉलेज परिसर में आयोजित किया गया। जिसके योग प्रशिक्षक डॉ सुभाष चन्द्र झा द्वारा प्रोटोकॉल के आधार पर प्रतिदिन योगाभ्यास कराया गया। 21 जून 2025 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के थीम 'एक पृथ्वी-एक स्वास्थ्य' पर केंद्रित आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) महापल्ली, एन एस एस इकाई बटमूल कॉलेज, लोईंग भाजपा मंडल रायगढ़ एवं ग्राम पंचायत महापल्ली द्वारा प्रोटोकॉल के अनुरूप सामूहिक योगाभ्यास किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी एल पटेल ने नियमित योग करने के फायदे को विस्तृत रुप से बताते हुए कहा कि योग एक प्राचीन शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास है जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी। 'योग' शब्द संस्कृत से लिया गया है और इसका अर्थ है जुड़ना या एकजुट होना, जो शरीर और चेतना के मिलन का प्रतीक है। यह एक ऐसी विद्या है जो तन, मन और आत्मा को संतुलन में रखती है। लोईंग भाजपा मंडल के अध्यक्ष मिनकेत प्रधान ने कहा कि योग केवल आसनों का अभ्यास नहीं है, बल्कि यह एक जीवनशैली है, जो अनुशासन, एकाग्रता और आत्मचिंतन सिखाती है। योग आपके तन को ही नहीं, बल्कि आपके स्वस्थ दिमाग और शांत मन को भी दिशा देता है। यह अंदरूनी ऊर्जा को जाग्रत करता है और आपको भावनात्मक रूप से मजबूत बनाता है। महाविद्यालय संचालन समिति के सचिव दशरथ गुप्ता ने कहा कि योग एवं ध्यान प्रतिदिन भोजन की तरह करना चाहिए जिस प्रकार से शरीर को नियमित भोजन की आवश्यकता पड़ती है उसी प्रकार योग योग एवं ध्यान से शरीर की फिटनेस बनती है अंत में टीकाराम प्रधान ने योग दिवस पर अपना विचार प्रकट किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी एल पटेल, महाविद्यालय संचालन समिति के सचिव दशरथ गुप्ता, वरिष्ठ प्राध्यापक के प्रो पी के कापड़ी, प्रो पी के गुप्ता रासेयो कार्यक्रम अधिकारी डॉ. के के गुप्ता, डॉ विक्रांत गुप्ता, डॉ गीता देवांगन, त्रिलोचन बरेठ, निशांत पण्डा, अनुप्रिया गुप्ता, सुमन किसान, सुशीला यादव, रासेयो स्वयंसेवक प्रशांत मेहर, सूरज चौहान, नीजू दास, आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) महापल्ली के डॉ सुभाष चन्द्र झा, वर्षा प्रधान ,औषधालय के स्टाफ गंगा सिदार , विश्वबंधु सोनी , स्वाति किसान, नियमित आने वाले योग साधक संपत पटेल, प्रेमानंद , गजेंद्र , प्रदीप गुप्ता , ललिता गुप्ता , कृष्णलाल गुप्ता , खुशीलाल, लोइंग भाजपा मंडल के अध्यक्ष मिनकेत प्रधान, भाजपा महामंत्री छबिलाल पटेल, ग्राम पं. महापल्ली के सरपंच श्रीमती तपस्विनी किसान, सचिव लोकनाथ जेना, पूर्व जनपद पंचायत सदस्य टीकाराम प्रधान, ग्राम पंचायत कुकुर्दा सरपंच प्रतिनिधि ललाट गुप्ता, ज्ञान सागर, विकास प्रधान, विनय श्रीवास, आनंद अग्रवाल, शत्रुघन, प्रभात मिंज एवं अन्य गणमान्य नागरिकों की विशेष उपस्थिति रही।

खास खबर

थवाईत नर्सिंग होम के संचालक डॉ. सुबोध थावाइत के साथ मरीज के परिजन ने की हाथापाई, पुलिस में रिपोर्ट दर्ज

कोरबा 20 जून (आरएनएस)। कोसाबाड़ी कोरबा स्थित थवाईत नर्सिंग होम के संचालक और सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉक्टर सुबोध थावाइत के साथ मरीज के परिजन ने हाथापाई की। डॉक्टर से विवाद करने वाले शख्स का आरोप था कि उसने अपने बच्चे का डॉक्टर सुबोध से इलाज कराया था, लेकिन स्वस्थ होने की बजाय बच्चे की तबीयत और खराब हो गई।

उसे रायपुर ले जाया गया, जहां काफी प्रयास के बाद चिकित्सकों ने बच्चे की जान बचाई। इस बात को लेकर बातचीत के दौरान उत्तेजित शख्स ने डॉ सुबोध पर हाथ छोड़ दिया। मारपीट की वारदात सीसीटीवी में कैद हैं।

मामले की जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया किरू डॉक्टर सुबोध थवाईत ने मामले की सूचना सिविल लाइन पुलिस को दी है। मारपीट करने वाला शख्स कौन है और कहां का निवासी है, इसकी जानकारी अब तक पुलिस के पास नहीं है। पुलिस आरोपी के बारे में समग्र जानकारी हासिल करने का प्रयास कर रही है।

डॉक्टर समुदाय की प्रतिक्रिया वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर सुबोध के साथ की गई मारपीट और अभद्रता की आलोचना हो रही है। निजी अस्पताल संचालकों ने भी इस घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है और आरोपियों पर सख्त कार्रवाई की मांग की है।

पुलिस की कार्रवाईः पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे।

आईटीआई पोंड़ीउपरोड़ा में व्यवसाय आईओटी टेक्नीषियन में प्रवेश के लिए आनलाईन रजिस्ट्रेषन 25 तक

कोरबा आईटीआई पोंड़ी उपरोड़ा में व्यवसाय कोपा, आईओटी टेक्नीषियन (स्मार्ट एग्रीकल्चर) एवंआईओटी टेक्नीषियन (स्मार्ट हेल्थ केयर) में सत्र 2025-26 में प्रवेष के इच्छुक अभ्यर्थी 25 जून तक आनलाईन आवेदन रजिस्ट्रेषन कर सकते हैं। विस्तृत जानकारी विभागीय वेबसाईट सीजीआईटीआई डाट एडमिषन्स डाट एनआईसी डाट आईएन पर उपलब्ध है।

प्रयास आवासीय विद्यालय अंतर्गत कक्षा 9वीं में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग शेड्यूल जारी

कोरबा प्रयास आवासीय विद्यालयों में वर्ष 2025-26 में कक्षा 9वीं में प्रवेष हेतु विद्यार्थियों की वर्गवार मेरिट एवं प्रतीक्षा सूचीविभागीय वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है। साथ हीकाउंसिलिंग की तिथि घोषित कर दी गई है। काउंसलिंग स्थल प्रयास कन्या आवासीय विद्यालय गुढ़्यारी रायपुर में आयोजित है। अनुसूचित जनजाति एवं विषेष रूप से कमजोर जनजाति समूह बालक हेतु 23जून को प्रातः 10 से शाम 5 बजे तक तथा कन्या हेतु 24 जून दोपहर प्रातः 10 से शाम 5 बजे तक काउंसिलिंग की जाएगी। इसी प्रकार अनुसूचित जाति बालक एवं बालिका हेतु 25 जून को प्रातः 10 बजे से शाम 05 बजे तक, अन्य पिछड़ा वर्ग बालक एवं बालिका हेतु 26 जून को प्रातः 10 बजे से शाम 05 बजे तक तथा सामान्य वर्ग बालक ।

मुख्यमंत्री शामिल हुए जशपुर के रणजीत स्टेडियम में

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने योग को दिलाई वैश्विक पहचान

रायपुर, मुख्यमंत्री ने नालंदा परिसर का भूमिपूजन किया। 11.29 करोड़ रुपये की लागत से 2 एकड़ में बनने वाले इस परिसर में 500 विद्यार्थी एक साथ अध्ययन कर सकेंगे। परिसर में एक आकर्षक उद्यान भी विकसित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इससे ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को विशेष लाभ मिलेगा। आज ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र भी जागरूक होकर प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए राज्य सरकार ने सभी जिला मुख्यालयों और बड़े शहरों में नालंदा परिसर स्थापित करने का निर्णय लिया है।

मुख्यमंत्री शामिल हुए जशपुर के रणजीत स्टेडियम में

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज जशपुर जिला मुख्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में हजारों लोगों के साथ योगाभ्यास किया और सभी को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि योग कोई नई पद्धति नहीं, बल्कि हमारी प्राचीन सनातन परंपरा का अभिन्न अंग है, जिसे ऋ षि-मुनियों ने विकसित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में योग को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया, जिसके परिणामस्वरूप 2015 से प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में विश्वभर में मनाया जा रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि आज 175 से अधिक देशों में योग की गूंज सुनाई देती है। मुख्यमंत्री के साथ जनप्रतिनिधियों, स्कूली छात्र-छात्राओं, अधिकारियों, कर्मचारियों और आम नागरिकों ने उत्साहपूर्वक योगाभ्यास में भाग लिया। योग प्रशिक्षकों ने चक्रासन, अर्धचक्रासन, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, प्राणायाम, वज्रासन सहित विभिन्न आसनों का अभ्यास कराया।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि दिन के 24 घंटों में से कुछ समय योग के लिए अवश्य निकालें। इससे न केवल गंभीर बीमारियां दूर होती हैं, बल्कि भविष्य में रोग होने की संभावना भी कम होती है। उन्होंने जेनेरिक दवाओं के उपयोग पर बल देते हुए कहा कि ये दवाएं प्रभावी, सुलभ और किफायती हैं। मुख्यमंत्री ने स्कूली बच्चों की बड़ी संख्या में भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि योग से बच्चों का मन शांत होता है और पढ़ाई में ध्यान केंद्रित होता है।

नालंदा परिसर का किया भूमिपूजन

इस अवसर पर

मुख्यमंत्री ने कुल 107.81 करोड़ रुपये के 64 कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया। इसमें जशपुर विधानसभा क्षेत्र में 61.20 करोड़ रुपये के 85 कार्यों का भूमिपूजन और 15.80 करोड़ रुपये के 6 कार्यों का लोकार्पण शामिल है। इसी प्रकार, कुनकुरी विधानसभा क्षेत्र के फरसाबहार विकासखंड में 24.90 करोड़ रुपये के 15 कार्यों का भूमिपूजन और 5.91 करोड़ रुपये के 4 कार्यों का लोकार्पण किया गया।

समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि योग सभी के लिए समान रूप से लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष योग दिवस की थीम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य है, जो मानव और पृथ्वी के परस्पर संबंध को दर्शाती है। इस वर्ष का योग हरित योग पर आधारित है, जिसके तहत अधिक से अधिक पौधरोपण का संदेश दिया जा रहा है। योग आयोग के अध्यक्ष रूप नारायण सिन्हा ने कहा कि जशपुर की वादियां अत्यंत सुंदर हैं और योग के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती हैं। यहां की चाय, काजू और नाशपाती जैसी फसलें इसे और विशेष बनाती हैं।

धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत कुदुरमाल शिविर में ग्रामीण हुए लाभान्वित

कोरबा जनजातीय सशक्तिकरण की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम के तहत विकासखण्ड कोरबा के कुदुरमाल क्लस्टर में धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान अंतर्गत जागरूकता सह लाभ संतृप्ति शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर हाईस्कूल कुदुरमाल परिसर में बरीडीह, देवरमाल, कटबितला, कुदुरमाल, पताढ़ी, सेमीपाली एवं उरगा ग्रामों के हितग्राहियों हेतु आयोजित हुआ। शिविर के दौरान कुल 89 हितग्राहियों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत लाभ प्रदान किया गया। शिविर में जनजातीय परिवारों को 12 आधार कार्ड,52 राशन कार्ड,10 मनरेगा जॉब कार्ड, 01आयुष्मान कार्ड, 9 पेंशन स्वीकृति,3 उज्ज्वला कनेक्शन, 2 जनधन खाते शामिल हैं।

शिविर में बरीडीह सरपंच श्रीमती रिंकी कंवर सेमीपाली सरपंच श्री राजेन्द्र सिंह कंवर देवरमाल सरपंच श्री लालसिंह कंवर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत कोरबा श्रीमती कौशाम्बी गबेल विकास विस्तार अधिकारी श्रीमती महेश्वरी साव सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

योग भारत की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता, जिसे पूरे विश्व ने अपनाया : अमर अग्रवाल

11 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सभी वर्ग के लोगों के किया सामूहिक योगाभ्यास

बिलासपुर आज पूरे देश के साथ साथ 11 वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह और जोश के साथ जिले में भी मनाया गया। स्व. बी.आर. यादव बहतराई स्टेडियम में आयोजित जिला स्तरीय सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, जिले के आला अधिकारियों और सैकड़ों की संख्या में नगरवासियों ने योगाभ्यास किया। बिलासपुर विधायक अमर अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और विभिन्न योग मुद्राओं का अभ्यास किया। इस दौरान महापौर श्रीमती पूजा विधानी, जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश सूर्यवंशी, संभागायुक्त सुनील जैन, कलेक्टर संजय अग्रवाल, एसएसपी रजनेश सिंह,नगर निगम कमिश्नर अमित कुमार, जिला पंचायत सीईओ संदीप अग्रवाल, पूर्व महापौर किशोर राय सहित जनप्रतिनिधियों, जिला स्तरीय अधिकारियों, कर्मचारियों व नागरिकों, छात्र-छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लेकर योगासन एवं प्राणायाम की विभिन्न मुद्राओं का एक साथ सामूहिक अभ्यास किया। योगाभ्यास ब्रह्मकुमारी संस्थान की मंजू दीदी द्वारा कराया गया। योग संगम एवं हरित योग की थीम पर योगाभ्यास के बाद सभी ने पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का सन्देश भी दिया। योगाभ्यास के उपरांत मुख्य अतिथि अमर अग्रवाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि योग एवं अध्यात्म की भारत की प्राचीन परम्परा को सम्पूर्ण विश्व ने अपनाया है। योग भारत की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता है। वसुधैव कुटुंबकम् की हमारी संस्कृति है जो कहती है विश्व का कल्याण हो। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योग को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई। भारत की संस्कृति जो बंधुत्व की भावना रखती है लोगों को जोड़ने का काम करती है। योग एक ऐसा माध्यम है जिससे ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। उन्होंने सभी से अपील की कि नियमित रूप से योग करें स्वास्थ्य रहें और विश्व के साथ अपने देश, राज्य और अपने जिले के विकास में योगदान दें। उन्होंने आगे कहा कि योग से शारीरिक व मानसिक क्षमता बढ़ती है तथा विकार दूर होता है और स्वस्थ जीवन के लिए योग बहुत ही आवश्यक है। योग से स्वस्थ तन और मन का सकारात्मक विकास होता है ।

आज सुबह सात बजे सभी उपस्थित अतिथियों के साथ योग प्रशिक्षक मंजू दीदी द्वारा बैठकर, खड़े होकर तथा लेटकर किए जाने वाले सूक्ष्म योग, अर्द्धचक्रासन, ताड़ासन, भुजंगासन, वज्रासन, त्रिकोणासन, उत्तानपाद आसन, कटिचक्रासन, अर्धकटिचक्रासन, उष्ट्रासन, मत्स्यासन, सहित विभिन्न प्रकार योग मुद्रा का अभ्यास कराया गया। साथ ही कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी जैसे विभिन्न प्राणायामों का सामूहिक अभ्यास कराया गया। ब्रह्मकुमारी, आर्ट ऑफ लिविंग और पतंजलि संस्था द्वारा योग कराया गया। इस अवसर पर एडीएम शिव बनर्जी , समाज कल्याण विभाग की संयुक्त संचालक श्रीमती श्रद्धा मैथ्यू, जिला शिक्षा अधिकारी अनिल तिवारी, सहित अन्य अधिकारी एवं वरिष्ठ नागरिकगण तथा काफी संख्या में अधिकारी-कर्मचारी व छात्र-छात्राएं मौजूद थे। जिले के सभी विकासखंड में भी योग दिवस मनाया गया।

खनिज और पुलिस विभाग की संयुक्त कार्रवाई, 1300 ट्रैक्टर से अधिक अवैध रुप से संग्रहित रेत जप्त, आगे भी जारी रहेगी कार्रवाई

कोरबा जिला खनिज विभाग और पुलिस की संयुक्त छापामार कार्रवाई में शुक्रवार को 1300 ट्रैक्टर से अधिक मात्रा में अवैध रूप से भंडारित रेत जप्त किया गया। इस कार्रवाई के बाद रेत चोरों में हड़कंप मच गया है। जिला खनिज अधिकारी यू पी खूंटे ने कार्रवाई की पुष्टि की है।

जानकारी के अनुसार राज्य शासन से प्राप्त निर्देशानुसार और कलेक्टर अजीत वसंत के मार्गदर्शन में रैनी सीजन में नदी नालों से अवैध रेत खनन और अवैध रूप से रेत का भंडारण कर कालाबाजारी करने वालों की पतासाजी कर कार्यवाही की जा रही है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कपाटमुड़ा- भैरोताल और बरमपुर डंप क्षेत्र में छापामार कार्रवाई की गई। कपाटमुड़ा- भैरोताल यार्ड में करीब 1000 ट्रैक्टर रेत अवैध रूप से भंडारित कर रखा गया था। आसपास के लोगों ने बताया कि कादिर खान ने रेत का भंडारण किया है। मौके पर कोई व्यक्ति नहीं मिलने पर स्थानीय लोगों की मौजूदगी में जप्ती व पंचनामा कार्रवाई की गई। इसी तरह बरमपुर डंप क्षेत्र में 250 ट्रैक्टर अवैध रूप से संग्रहित रेत पाया गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि हीरू जायसवाल ने रेत जमा कर रखा है। बरमपुर डंप में ही दो अन्य स्थानों पर भी 50 - 50 ट्रेक्टर अवैध रेत संगृहीत पाया गया। तीनों स्थानों की रेत की जप्ती बनाई गई है। इस संबंध में जिला खनिज अधिकारी यू पी खूंटे से संपर्क किया गया तो उन्होंने कार्रवाई की पुष्टि की। छापामार करवाई में दर्री सी एस पी विमल कुमार पाठक (आई पी एस) और जिला खनिज अधिकारी यू पी खूंटे के साथ कुसमुंडा थाना प्रभारी युवराज तिवारी, सर्वमंगला पुलिस चैकी प्रभारी विभव तिवारी के साथ पुलिस और खनिज विभाग के सिपाही शामिल थे।

नवीन कानून के क्रियान्वयन के लिए तकनीकी प्रशिक्षण एवं विवेचना पद्धति विषय पर रेंज स्तरीय एक दिवसीय प्रशिक्षण/कार्यशाला का आयोजन सम्पन्न

डॉ संजीव शुक्ला, पुलिस महानिरीक्षक बिलासपुर रेंज के निर्देशन में हुआ सम्पन्न।

बिलासपुर, साइबर विवेचना अंतर्गत नवीन कानून के क्रियान्वयन हेतु तकनीकी प्रशिक्षण एवं विवेचना पद्धति विषय पर रेंज स्तरीय एक दिवसीय प्रशिक्षण/कार्यशाला का आयोजन डॉ संजीव शुक्ला, पुलिस महानिरीक्षक बिलासपुर रेंज के निर्देशन में हुआ सम्पन्न। ज़्कार्यशाला में जिलों से नामांकित राजपत्रित पुलिस अधिकारी, थाना प्रभारी, सउनि, सीसीटीएनएस मास्टर ट्रेनर, प्रधान आरक्षक/आरक्षक स्तर के कुल 145 अधिकारियों को दिया गया प्रशिक्षण। प्रशिक्षण में विवेचना संबंधी तकनीकी पोर्टल व एप की दी गई जानकारी। साइबर तथा तकनीकी विषयों के विशेषज्ञ अधिकारियों द्वारा दिया गया प्रशिक्षण। डॉ. संजीव शुक्ला, पुलिस महानिरीक्षक, बिलासपुर रेंज के द्वारा जिलों में पदस्थ अधिकारी/कर्मचारियों को उनके व्यवसायिक व तकनीकी योग्यता को बढ़ाने के लिए वार्षिक प्रशिक्षण कैलेण्डर बनवाया गया है जिसके अंतर्गत प्रतिमाह अलग-अलग विषयों पर रेंज मुख्यालय बिलासपुर में प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसी अनुक्रम में माह जून में सायबर विवेचना - ''नवीन कानून के क्रियान्वयन हेतु तकनीकी प्रशिक्षण एवं विवेचना पद्धति'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन ''चेतना भवन'' रक्षित केन्द्र बिलासपुर किया गया जिसमें जिलों से नामांकित राजपत्रित अधिकारी, थाना प्रभारी, उप निरीक्षक/निरीक्षक/प्रधान आरक्षक तथा सीसीटीएनएस मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षित कर्मचारी शामिल हुए। प्रशिक्षण/कार्यशाला के शुभारंभ के अवसर पर प्रारंभिक उद्बोधन में श्री रजनेश सिंह द्वारा सायबर प्रशिक्षण के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए प्रशिक्षणार्थियों को नवीन कानूनों की बारीकियों को समझने तथा थानों में पंजीबद्ध अपराधों की विवेचना पूर्ण कर अभियोग पत्र प्रस्तुत करने हेतु नवीन कानून में निर्धारित समय सीमा का पालन तथा विभिन्न पोर्टल का उपयोग करने कहा गया ।

अवैध शराब कारोबार के मामले में 50 लाख की संपत्ति जब्त

बिलासपुर, जिले में अवैध शराब कारोबार के खिलाफ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए करीब 50 लाख रुपये की अवैध संपत्ति को फ्रीज करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह कार्रवाई बीएनएसएस की धारा 107 के तहत की गई है और इसे प्रदेश में इस कानून के तहत पहली पहल माना जा रहा है।

बता दें कि कोनी थाना क्षेत्र में रहने वाले संतोष वर्मा, उनकी पत्नी देवीबाई वर्मा और पुत्र राहुल वर्मा पर वर्षों से महुआ शराब के अवैध निर्माण और बिक्री का संगठित धंधा चलाने का आरोप है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, इन पर पहले भी कई बार केस दर्ज हो चुके हैं, लेकिन गैरकानूनी गतिविधियों में कोई कमी नहीं आई। पुलिस जांच में सामने आया कि उक्त परिवार ने अवैध शराब से कमाए धन से एक प्लॉट, दो मंजिला मकान, ट्रैक्टर, स्विफ्ट कार और दो मोटरसाइकिलें खरीदीं। इन सभी संपत्तियों की कुल कीमत लगभग 50 लाख रुपये आंकी गई है। आरोपियों की आमदनी का कोई वैध स्रोत नहीं पाया गया। मामले में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रजनीश सिंह के निर्देश पर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेंद्र जायसवाल और नगर पुलिस अधीक्षक अक्षय प्रमोद साबद्रा के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी राहुल तिवारी के नेतृत्व में कार्रवाई को अंजाम दिया गया। जांच के उपरांत संपत्ति जब्ती से संबंधित विस्तृत प्रतिवेदन न्यायालय को सौंपा गया है, जिस पर जल्द ही आदेश की संभावना है।

पुलिस ने कहा कि यह कार्रवाई प्रदेश में अवैध शराब कारोबार में लिप्त लोगों के लिए एक कड़ा संदेश है। इससे न केवल अपराध पर लगाम लगेगी, बल्कि आम जनता में कानून के प्रति भरोसा भी मजबूत होगा। भविष्य में भी इस तरह की गतिविधियों पर सख्त कदम उठाने की चेतावनी दी गई है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने 'गजरथ यात्रा' का किया शुभारंभ

0-रणजीता स्टेडियम परिसर में लगाए सिंदूर के पौधे, पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

रायपुर, । अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज जशपुर के रणजीता स्टेडियम परिसर में आयोजित कार्यक्रम में 'गजरथ यात्रा' को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। यह अभिनव पहल छत्तीसगढ़ में मानव-हाथी द्वंद को कम करने और वन्यजीव संरक्षण के लिए जनजागरूकता फैलाने के उद्देश्य से शुरू की गई है। इस यात्रा के माध्यम से स्कूलों, ग्राम पंचायतों और हाट-बाजारों में पहुंचकर हाथियों के व्यवहार, सुरक्षा उपायों और सह-अस्तित्व के संदेश को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि मानव और हाथियों के बीच बढ़ते टकराव को कम करने के लिए सामुदायिक भागीदारी और जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। 'गजरथ यात्रा' इस दिशा में एक सार्थक माध्यम बनेगी, जो लोगों को शिक्षित कर मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने में सहायक होगी। उन्होंने वन विभाग के उन कर्मचारियों को भी सम्मानित किया, जिन्होंने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री साय ने स्टेडियम परिसर में सिंदूर का पौधा लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत नागरिकों से अपील की कि वे अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें । उन्होंने कहा कि पेड़ न केवल जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि जल संरक्षण, जैव विविधता और जलवायु संतुलन के लिए भी आवश्यक हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने वन विभाग द्वारा तैयार लघु फिल्म और पुस्तिका का विमोचन भी किया, जिसमें हाथियों से संबंधित सावधानियां, उनके व्यवहार को समझने और सुरक्षा उपायों की जानकारी दी गई है। यह सामग्री स्कूली बच्चों, ग्रामीणों और स्थानीय समुदायों में वितरित की जाएगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं और जागरूकता अभियानों की जानकारी दी, जो सतत विकास और हरित छत्तीसगढ़ के निर्माण में सहायक हैं।

उल्लेखनीय है कि 'गजरथ यात्रा' राज्य सरकार की उस व्यापक रणनीति का हिस्सा है, जो सतत विकास, जैव विविधता संरक्षण और स्थानीय समुदायों की सहभागिता के माध्यम से वन्यजीवों के लिए सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों और वन विभाग की टीम को इस प्रयास के लिए शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, योग आयोग के अध्यक्ष श्री रूप नारायण सिन्हा, पूर्व सांसद श्री रणविजय सिंह जूदेव, पद्मश्री श्री जागेश्वर यादव, विधायक श्रीमती रायमुनी भगत, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सालिक साय, माटीकला बोर्ड अध्यक्ष श्री शंभूनाथ चक्रवर्ती, सन्निर्माण कर्मकार मंडल अध्यक्ष श्री रामप्रताप सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष श्री अरविंद भगत, उपाध्यक्ष श्री यश प्रताप सिंह जूदेव, संभागायुक्त श्री नरेंद्र दुग्गा, आईजी श्री दीपक झा, कलेक्टर श्री रोहित व्यास, एसएसपी श्री शशि मोहन सिंह सहित अनेक जनप्रतिनिधि, नागरिक, स्कूली छात्र और योग संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

गेवरा कोयला खदान में करंट की चपेट में आए ठेका कर्मी की मृत्यु के बाद भड़का आक्रोश, ग्रामीणों ने बंद किया 7 नंबर गेट

कोरबा)। एसईसीएल बिलासपुर की गेवरा कोयला परियोजना अंतर्गत एसईसीएल की मेगा गेवरा परियोजना में करंट प्रवाहित केबल की चपेट में आकर एक ठेका कर्मी की मृत्यु पश्चात मामला गरमा गया है। मृतक के परिजन और ग्रामीण मुआवजे की मांग को लेकर आक्रोशित हैं। सुबह बड़ी संख्या में लोग गेवरा खदान के 7 नंबर गेट के सामने एकत्र हुए और विरोध प्रदर्शन करते हुए गेट को बंद कर दिया।

जानकारी के अनुसार, गेवरा खदान में कार्यरत एक निजी कंपनी के अधीन ठेका कर्मी हीरालाल (35 वर्ष), निवासी बिंझरी, बुधवार दोपहर लगभग 3.30 बजे 6.6 केवी के केबल को बारिश से बचाने कन्वेयर बेल्ट से ढंक रहा था, तभी करंट की चपेट में आ गया। सहकर्मियों द्वारा तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक तीन वर्षों से इस कंपनी में इलेक्ट्रीशियन के पद पर कार्यरत था और तीन बेटियों का पिता था। हीरालाल अपने परिवार का इकलौता कमाने वाला सदस्य था। घटना के बाद मृतक के गांव और खदान क्षेत्र में आक्रोश का माहौल है।

सुबह ग्रामीणों ने 7 नंबर गेट को बंद कर दिया और धरने पर बैठ गए। प्रदर्शनकारियों की मांग है कि मृतक के परिवार को पर्याप्त मुआवजा, स्थायी नौकरी और सुरक्षा चूक की उच्च स्तरीय जांच कराई जाए।

आईसीएआर-एनआईबीएसएम ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

रायपुर, आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक तनाव प्रबंधन संस्थान (आईसीएआर-एनआईबीएसएम), रायपुर में आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. राय, वैज्ञानिकगण, कर्मचारी एवं छात्रगण उपस्थित रहे और सामूहिक योगाभ्यास किया।

प्रयास विद्यालय चयन परीक्षा में महासमुंद के 131 विद्यार्थियों की सफलता पर कलेक्टर ने दी बधाई

महासमुंद, महासमुंद जिले ने एक बार फिर शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। प्रयास आवासीय विद्यालयों में कक्षा 9वीं प्रवेश हेतु आयोजित चयन परीक्षा में जिले के 131 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं ने चयनित होकर जिले का नाम गौरवान्वित किया है।

कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह ने इस उत्कृष्ट उपलब्धि पर समस्त चयनित विद्यार्थियों, उनके पालकों और शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और पालकों के सतत सहयोग का परिणाम है। उन्होंने कहा कि प्रयास विद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में चयन से न केवल विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल होगा, बल्कि यह जिले की शिक्षा व्यवस्था के लिए भी एक प्रेरणास्पद उपलब्धि है। जिले के चार विकासखंडों बसना, महासमुंद, सरायपाली और बागबाहरा क्षेत्र के बच्चों ने इस सफलता में भागीदारी निभाई है,जिसमें बसना विकासखंड से 20 विद्यार्थियों ने चयन हुआ है। खोकसा, बंसुला, चिमरकेल, मोहका, हबेकांटा जैसे ग्रामीण अंचलों के बच्चों ने यह सफलता हासिल की। सरस्वती शिशु मंदिर बसना, केजीबीवी बंसुला और एमएस खोकसा जैसे विद्यालयों से चयनित विद्यार्थियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा। इसी प्रकार से महासमुंद विकासखंड से 14 विद्यार्थियों ने चयन सूची में स्थान प्राप्त किया। इनमें सेजेस नयापारा तुमाडबरी, उच्च प्राथमिक शाला साराडीह, रामसागर पारा, लखनपुर जैसे शालाओं के छात्र शामिल हैं।

(रायपुर) निकष परमार की कविता संग्रह हम कोई रास्ता न बन पाए का विमोचन 22 को

रायपुर, । निकष परमार कविता संग्रह हम कोई रास्ता न बन पाए का विमोचन एवं गोष्ठी का आयोजन 22 जून रविवार को प्रेस क्लब रायपुर में दोपहर दो बजे आयोजित किया गया है। उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शशांक शर्मा अध्यक्ष छत्तीगसढ़ साहित्य अकादमी अति विशिष्ठ अतिथि पंकज कुमार झा मीडिया सलाहकार मुख्यमंत्री छग अध्यक्षता डॉ. चितरंजन कर वरिष्ठ साहित्यकार एवं भाषाविद के सानिध्य में होगा।

अभिषेक गुप्ता ने स्वास्थ्य मंत्री को आईसीयू में सुविधाएं बढ़ाने ज्ञापन सौंपा

रामानुजगंज , आरएनएस)। अखिल भारतीय पंचायत परिषद के अध्यक्ष अभिषेक गुप्ता ने स्वास्थ्य मंत्री को ज्ञापन सौप जिला अस्पताल में आईसीयू बैड में आवश्यक उपकरण की सुविधा उपलब्ध कराने की मांग की है। अभिषेक गुप्ता ने कहा कि जिला अस्पताल में आईसीयू की सुविधा उपलब्ध कराई गई है परंतु इसमें आवश्यक इलेक्ट्रिक उपकरण उपलब्ध नहीं होने कारण इसका लाभ मरीजों को नहीं मिल पा रहा है श्री गुप्ता ने स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल को ज्ञापन सौप जल्द जिला अस्पताल आईसीयू बेड में आवश्यक इलेक्ट्रिक उपकरण उपलब्ध कराने की मांग की।

योग को जीवन शैली में शामिल करें–गुरु खुशवंत साहेब

मोहला में जनप्रतिनिधियों, अधिकारी कर्मचारियों, प्रबुद्ध नागरिकों, स्कूली छात्र छात्राओं ने उत्साह से किया योगासन

० योग संकल्प,नशा मुक्ति एवं जल जागरूकता की ली गई शपथ

मोहला , (आरएनएस)। जिला मुख्यालय के माडिंगपिडिंग स्थित पुलिस लाईन में आज 11 वें विश्व योग दिवस के अवसर पर सामूहिक योगाभ्यास किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरु खुशवंत साहेब ने इस अवसर पर सभी साधकों को योगा दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि योग भारत की प्राचीन संस्कृति रही है। भारतीय पुरातन विरासत और धरोहर को संजोए रखने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की संकल्पना से आज विश्व के 177 देशों में योगा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि हमें योग को दैनिक जीवन में शामिल करना चाहिए। योग को दैनिक जीवन शैली में शामिल कर स्वस्थ्य जीवन यापन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि योग करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। नियमित योग करने से संतुलित जीवन यापन करने का रास्ता खुलता है। योग करने से शारीरिक मानसिक एकाग्रता बढ़ता है। उन्होंने कहा कि आज योग से विश्व में भारत की अलग पहचान स्थापित हुआ है।

इस अवसर पर जिला पंचायत के अध्यक्ष नम्रता सिंह, कलेक्टर तुलिका प्रजापति, पुलिस अधीक्षक यशपाल पाल सिंह, वनमण्डलाधिकारी दिनेश पटेल, जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी भारती चंद्राकार, अपर कलेक्टर विजेंद्र सिंह पाटले, अधिकारी कर्मचारियों, जनप्रतिनिधियों स्कूली छात्र छात्राओं प्रबुद्ध नागरिकों ने सामूहिक योगाभ्यास किया। इस अवसर पर योगा संकल्प, नशा मुक्ति एवं जल संरक्षण की शपथ लिया गया।

योगा दिवस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरु खुशवंत साहेब सहित जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों ने पुलिस परेड मैदान में पौधारोपण किया। धरती आबा योजनांतर्गत स्कूली बच्चों ने मानव श्रृंखला बनाकर एकता व सद्भावना का परिचय दिया। इस अवसर पर सभी साधकों को आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाया गया। जिला योगा समन्वयक श्री उमाशंकर तिवारी, विकासखंड योगा समन्वयक श्री वेद प्रकाश भुआर्य, पतंजलि योगाचार्य श्री पंचशील विश्वकर्मा ने कार्यक्रम में योगाभ्यास कराया।

- योगाभ्यास की विभिन्न विशेषताओं से नागरिकों को कराया गया परिचित

ओम की मंगल ध्वनि के साथ योग सत्र, योग संगम प्रारंभ किया गया। प्रशिक्षकों ने बताया कि योग-प्राणायाम ध्यान की त्रिवेणी है। योग प्रशिक्षक ने बताया कि योग शरीर को तथा प्राणायाम मन एवं बुद्धि को मजबूत बनाते हैं। योग अंतर्गत शिथलीकरण की प्रक्रिया, कड़ी संचालन, गर्दन के लिए योगाभ्यास सिखाया गया। जो सर्वाइकल स्पांडिलाइटिस की बीमारी के लिए फायदेमंद है। नागरिकों को वृक्षासन कराया गया। वृक्षासन मानसिक तनाव दूर करने में उपयोगी है। वृक्षासन से शरीर का संतुलन बना रहता है। वृक्ष की तरह प्रणाम की मुद्रा में आसन करना होता है। त्रिकोणासन कराया गया। साथ ही यह जानकारी दी गई की यह मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। भद्रासन से पैरों की मांसपेशियां तथा घुटने मजबूत बनते हैं। वज्रासन से पेट की तकलीफ मानसिक तनाव दूर होता है। योग प्रशिक्षकों ने बताया कि वज्रासन स्ट्रेस मैनेजमेंट के लिए कार्य करता है। वक्रासन डायबिटीज की बीमारी के लिए उपयोगी है। इस अवसर पर मकरासनए सेतुबंध आसन, पवनमुक्तासन किया गया। प्रशिक्षकों ने बताया कि ज्ञानमुद्रा से जोड़ों का दर्द दूर होता है। कपालभाति प्राणायाम मास्टर प्राणायाम है, जिससे 99 प्रतिशत बीमारियां दूर होती है। कपालभाति प्राणायाम से शरीर की प्रत्येक कोशिका में ऑक्सीजन की आपूर्ति होती है। इस आसन से तनाव दूर होता है तथा स्वस्थ होने की अनुभूति होती है। योग करने से शरीर की नकारात्मकता दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। इससे शुगर, ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियां दूर होती हैं। मास्टर प्राणायाम अनुलोम-विलोम प्राणायाम से शरीर में शक्ति जाग्रत होती है और विभिन्न तरह की व्याधियां दूर होती हैं। इसके साथ ही निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। इस प्राणायाम से एकाग्रता एवं जीवन शक्ति बढ़ती है तथा तनाव कम होता है। शिथलीकरण प्राणायाम से मस्तिष्क को शीतलता मिलती है तथा इससे रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

मुख्यमंत्री ने करोड़ों रूपए की सौगात दी

कुनकुरी के फरसाबहार ब्लॉक में अनेक कार्यक्रमों में शामिल हए साय रायपुर, 21 जून (आरएनएस)। मुख्यमंत्री जशपुर दो दिवसीय प्रवास पर हैं। उन्होंने आज विभिन्न विकासखण्डों का दौरा किया तथ विभिन्न विकास एवं निर्माण कार्यों की सौगात दी है। मुख्यमंत्री आज रात्रि विश्राम करेंगे। उसके पश्चात वे राजधानी लौटेंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने नागरिकों से कहा कि एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वृक्षारोपण का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वर्षा ऋतु शुरू हो चुकी है, जो पौधरोपण के लिए उपयुक्त समय है। कार्यक्रम में योग आयोग के प्रशिक्षकों को प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025– अमृत सरोवरों में विशेष योग सत्र और पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान

मोहला, । जिले में आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन अमृत सरोवरों में किया गया। जिसमें ग्रामवासी, स्कूल के बच्चे, स्व सहायता समूहों, सरपंचों और प्रकृति प्रेमियों ने भाग लिया।

नियद नेल्ला नार योजना

दूरस्थ एवं दुर्गम आदिवासी ग्रामों के
सर्वांगीण विकास की अभिनव पहल

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

- बस्तर में मार्च 2024 से **नियद नेल्ला नार** योजना प्रारंभ
- सुरक्षा कैम्पों के **10 किलोमीटर** के दायरे में पहुंच रही बुनियादी सुविधाएं
- बस्तर संभाग के **5 जिलों के 54 सुरक्षा कैम्पों के अंतर्गत 327 ग्राम शामिल**
- अब तक **34 हजार** परिवारों के **1.11 लाख लोग** लाभान्वित हुए
- **6173 परिवार** को **पीएम आवास** का लाभ
- **19,396** परिवारों को मनरेगा जॉब कार्ड प्रदत्त, **44,880** लोग बने हितग्राही
- **49,239 आयुष्मान कार्ड** प्रदत्त
- **81,090 लोगों को** मिला आधार कार्ड
- राशनकार्ड वितरण से **98,319 लोग लाभान्वित**

Ro- 4427/69

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक प्रेमेन्द्र अग्रवाल द्वारा अस्मा पब्लिशर्स इण्डिया प्राईवेट लि.,जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित कर तथा 5/756 रामसागरपारा, सिंधी स्कूल के पीछे, स्टेशनरी हाऊस, रायपुर 492001 (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक प्रेमेन्द्र अग्रवाल ।
www.lokshakti.in, lokshaktidaily@gmail.com, twitter.com/lokshaktidaily, facebook.com/lokshaktidaily कार्यकारी संपादक : राजेश अग्रवाल (किसी भी विवाद पर न्यायालय क्षेत्र रायपुर होगा)